Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Sammelan Patrika S. 1945
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113056

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113056
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113056

सम्मेलन-पत्रिका

संख्या २-३] आश्विन, कार्तिक, सम्वत् १९९५ [भाग २६

कहानी में वार्तालाप या कथोपकथन

[एक कहानी समालोचक]

कहानी में किसी घटना अथवा चरित्र के स्पष्ट करने के लिए लेखक को एक ऐसे साधन की आवश्यकता पड़ती है जो किसी स्थल के अनुपयुक्त न हो और संक्षेप में सारी बातों पर प्रकाश डाल दे। यह साधन केवल पात्रों की बातचीत में ही प्रयुक्त हो सकता है। वे आपस में इस तरह की बातचीत करते हैं जिससे यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि कहानी का प्रवाह किस ओर है। कथानक के कई स्थल तो ऐसे होते हैं जिनका दिग्दर्शन कराना अथवा जिनका वर्णन करना कहानी के सौन्दर्य को बहुत हानि पहुँचा सकता है। ऐसी परिस्थिति में कहानी लेखक केवल संकेत रूप से पात्रों में बातचीत करा देता है और घटना की ओर अपना भाव प्रकट कर देता है। इस प्रकार पात्रों की बातचीत किसी दृश्य का चित्रण करने में अथवा किसी घटना का प्रकाशन करने में एक महत्त्वपूर्ण सामग्री है, चाहे उस सामग्री का प्रयोग अधिक हो अथवा कम।

कथोपकथन विचार का क्रियात्मक रूप है। उससे पात्रों में जीवन की शक्तियाँ आती हैं और वे इस योग्य हो जाते हैं कि आप के सामने आकर आपही के समान बातें करें। यह आवश्यक है कि इस कथोपकथन में स्वाभाविकता की मात्रा यथेष्ट हो। उसी समय पात्रों में जीवन की शक्ति प्रवेश करती हुई जान पड़ेगी। अन्यथा ऐसा मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा कि सड़क पर भीख माँगनेवाला भिखारी तो साम्राज्य की चिन्ता में मग्न हो कर मंत्रियों से बातें करता है और फूलों की सेज पर सोनेवाला राजकुमार किसी भिखारी के समान भीख माँगता है। जो पात्र जिस योग्य हो उसमें वैसे ही वाक्यों का उपयोग करने की शक्ति हो, उसी समय पात्र आप के कंधे से कंधा मिला कर खड़ा हो सकेगा। तभी वह आपके समान साँस ले सकेगा।[१]

अच्छे कथोपकथन में निम्नलिखित बातें होना आवश्यक है :—

लक्षण

१—उससे पात्र विशेष के गुण अथवा दोष मालूम हों अथवा किसी घटना के संबन्ध में उपयुक्त स्थल के लिए सूचना मिल जाय।

२—उससे कथानक का प्रवाह आगे बढ़ता जाय और कार्य-व्यापार की अनेक परिस्थितियों की उचित अवतारणा हो।

३—उससे पात्र अथवा घटना का संघर्ष उत्पन्न हो और इस प्रकार कुतूहलता का अंश कहानी में चरम सीमा पर पहुँच जाय।

४—उससे लेखक यह न सिद्ध करे कि वह भाषा का पंडित है और अच्छी से अच्छी भाषा का प्रयोग उचित अथवा अनुचित स्थान पर कर सकता है। इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि कथोपकथन से हमें पात्र का चित्र मिलना चाहिए, लेखक का नहीं।

फलतः कार्य व्यापार की ओर मन एक बार ही आकृष्ट हो जाना चाहिए

अब हम इन बातों पर विस्तारपूर्वक विचार करेंगे। कथोपकथन का पहला गुण लीजिए :—

---

१. It should be your aim to work up the picture to a complete and life-like portrait.

—Kleiser

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथोपकथन से पात्र के लक्षण,गुण या दोष मालूम हो जाना चाहिए। जो बात किसी व्यक्ति के मुख से निकलती है यदि उससे उसके स्वभाव आदि का परिचय न मिल सका तो उसकी बात को आप क्या समझेंगे ? बोलने से तो विचार ही प्रकट होते हैं और वे विचार व्यक्ति-विशेष के हृदय से संबन्ध रखते हैं। कोई भी मनुष्य चाहे वह बन कर ही क्यों न बोले अपने ढंग अथवा लक्षणों का प्रकाशन अवश्य कर देता है। किन्तु इन लक्षणों का रूप इतना विकृत होता है कि उनका रूप आसानी से मालूम नहीं हो सकता। इसीलिए यह आवश्यक है कि पात्र विशेष का वार्तालाप उसके वास्तविक चित्र का परिचय अवश्य दे। ऐसे स्थलों पर वार्तालाप उस दर्पण के समान होना चाहिए जिसमें पात्र विशेष का स्वरूप स्पष्ट प्रतिविम्बित हो।

जब वार्तालाप किसी घटना के संबन्ध में हो तो उतनी बातों की आवश्यकता है जिनसे कहानी का प्रवाह आगे बढ़ता जाय, और कहानी में व्यर्थ की बातों का समावेश न हो। पाठक उसी समय जान जाय कि इस बातचीत का यह अभिप्राय है कि अमुक बात हम लोगों की समझ में आ जाय और कहानी के समझने में कोई असुविधा न हो।

दोनों प्रकार के कथोपकथन का उदाहरण इस प्रकार है:—

अ—कमलाकान्त भीतर आया, सुभद्रा ने उसे देखते ही कहा और चादर कहाँ छोड़ आये ?

छोड़ नहीं आया।

फिर ?

दे आया हूँ।

किसे ?

एक भिखमंगे को।

सुभद्रा की भौंहें तन गईं। रोष प्रकट करके बोली, चलो, तुम तो हमेशा ऐसा ही करते हो। उस दिन न जानें किस लड़के के लिए घर से बनियाइन ले गये थे, आज भिखमंगे को ऊनी चादर दे आये। एकाध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन किसी को अपनी कमीज़ और धोती उतार कर और दे आओ तो मुझे बड़ी ख़ुशी हो।

कमलाकान्त बोला मेरे पास और कुछ नहीं था। पैसे भी नहीं थे। इसी से चादर दे आया।

चलो अच्छा किया। यह कह कर सुभद्रा कुड़मुड़ाती हुई भीतर चली गई। बोध—कृष्णानन्द गुप्त,

इस कथोपकथन में सुभद्रा के स्वभाव का कितना अच्छा चित्रण हुआ है।

आ—तकरार बढ़ने लगी। दोनों अपनी टेक पर अड़े थे। न यह दबता था न वह। अप्रासंगिक बातें होने लगीं। मिरज़ा बोले, किसीने ख़ानदान में शतरंज खेली होती, तब तो इसके क़ायदे जानते। वे तो हमेशा घास छीला किये, आप शतरंज क्या खेलिएगा! रियासत और ही चीज़ है। जागीर मिल जाने से ही कोई रईस नहीं हो जाता।

मीर—क्या, घास आपके अब्बाजान छीलते होंगे। यहाँ तो पीढ़ियों से शतरंज खेलते चले आ रहे हैं।

मिरज़ा—अजी, जाइए भी। ग़ाज़िउद्दीन हैदर के यहाँ बावरची का काम करते करते उम्र गुज़र गई। रईस बनना कुछ दिल्लगी नहीं है।

मीर—क्यों अपने बुज़ुर्गों के मुँह कालिख लगाते हो, वे ही बावरची का काम करते होंगे। यहाँ तो हमेशा बादशाह के दस्तरख़्वान पर खाना खाते चले आए हैं।

मिरज़ा—अरे चल चरकटे, बहुत बढ़ बढ़ कर बातें न कर।

मीर—ज़बान सँभालिए, वरना बुरा होगा। मैं ऐसी बातें सुनने का आदी नहीं हूँ। यहाँ तो किसी ने आँखें दिखाईं कि उसकी आँख निकाल ली, है हौसला?

मिरज़ा—आप मेरा हौसला देखना चाहते हैं, तो फिर, आइए आज दो दो हाथ हो जायँ, इधर या उधर।

मीर—तो यहाँ तुमसे दबने वाला कौन है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों दोस्तों ने कमर से तलवारें निकाल लीं।

[शतरंज के खिलाड़ी – प्रेमचंद]

यहाँ वार्तालाप का ढंग इस प्रकार है जिससे मीर और मिरज़ा के स्वभाव के परिचय के साथ ही साथ हमें घटना धीरे धीरे बढ़ती हुई दृष्टिगोचर होती है और साधारण बातचीत से किस प्रकार एक भीषण कांड उपस्थित हो जाता है. इस बात का कुतूहलपूर्ण सत्य ज्ञात हो जाता है।

कथोपकथन का दूसरा लक्षण कथानक के प्रवाह का रक्षण है। वार्तालाप सदैव कहानी आगे बढ़ाने में सहायक हो। यदि उससे कहानी के प्रवाह में व्याघात आए तो यह समझना चाहिए कि कथानक केवल कथानक के लिए ही लिखा गया है, उससे कहानी का कोई सरोकार नहीं है। जितनी परिस्थितियाँ बातचीत से उत्पन्न की जा सकती हैं उतनी किसी अन्य साधन से नहीं। साधारण वर्णन से न तो उतनी परिस्थितियाँ ही उत्पन्न हो सकती हैं और न उनमें रोचकता ही आ सकती है। अतएव कहानी लेखक को इस बात का विचार रखना होता है कि उसके पात्रों की बातचीत सदैव इस प्रकार की हो जिससे कहानी में रोचकता के साथ ही साथ अनेक कार्यों की सृष्टि एक बार ही हो जाय।

इतने में सारंधा भी वहीं आ पहुँची। शीतला ने नागिन की तरह बल खा कर कहा—मर्यादा इतनी प्यारी है?

सारंधा—हाँ!

शीतला—अपना पति होता तो हृदय में छिपा लेती!

सारंधा—न, छाती में छुरा भोंक देती।

शीतला ने उठ कर कहा—झोली में छिपाती फिरोगी। मेरी बात गिरह में बाँध लो।

सारंधा—जिस दिन ऐसा होगा, मैं भी अपना वचन पूरा कर दिखलाऊँगी।

[सती सारंधा—प्रेमचन्द]

इस कथोपकथन में मनोरंजकता के साथ एक ऐसे कार्य व्यापार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सृष्टि हुई है जिसमें सारी कहानी का सौन्दर्य है। इसी एक कार्य के लिए कहानी में न जानें कितनी विचार धाराएँ प्रवाहित होती हैं, और अन्त में वे उसी स्थान पर विश्राम पाती हैं जहाँ इस कथोपकथन में कहे हुए कार्य की पूर्ति होती है।

कथोपकथन का तीसरा गुण है पात्र अथवा घटना का संघर्ष उत्पन्न करना। जिससे कहानी चरम सीमा पर पहुँच जाय। वार्तालाप तो उसी समय अच्छा हो सकता है जब पात्रों में विचार की विभिन्नता है। यदि सभी पात्र एक दूसरे के विचार से सहमत हैं तो बातचीत करने की आवश्यकता ही क्या है? जब दो व्यक्ति विरुद्ध विचार रखते हैं तभी बातचीत में मनोरंजकता का आविर्भाव होता है। यही कारण है कि जब दो व्यक्तियों में लड़ाई होती है तो सुनने के लिए बहुत से आदमी एकत्रित हो जाते हैं और वे उन लोगों की बातें बड़े कौतूहल से सुनते हैं। यदि पारस्परिक विचारों में सहानुभूति है तो विचार-विनिमय का अवसर ही नहीं आता। इसीलिए कथोपकथन ऐसे स्थान पर कराना चाहिए जहाँ विचारों की विभिन्नता है और पात्र एक दूसरे से लड़ने के लिए प्रस्तुत हैं। यदि कथोपकथन केवल मन बहलाने के लिए लिखा गया है तो वह कथोपकथन उत्कृष्ट श्रेणी का नहीं है।

मीर साहब का फ़रज़ी पिटता था। बोले, मैंने चाल चली ही कब थी?

मिरज़ा—आप चाल चल चुके हैं। मुहरा वहीं रख दीजिए। उसी घर में।

मीर—उस घर में क्यों रक्खूँ। मैंने हाथ से मुहरा छोड़ा ही कब था?

मिरज़ा—मुहरा आप क़यामत तक न छोड़ें तो क्या चाल ही न होगी? फ़रज़ी पिटते देखा, तो धांधली करने लगे।

मीर—धांधली आप करते हैं। हार जीत तक़दीर से होती है। धांधली करने से कोई नहीं जीतता।

मिरज़ा—तो इस बाज़ी में आपको मात हो गई।

मीर—मुझे क्यों मात होने लगी?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिरजा—तो आप मुहरा उसी घर में रख दीजिए, जहाँ पहले रक्खा था।

मीर—वहां क्यों रक्खूँ, नहीं रखता।

मिरजा—क्यों न रखिएगा आपको रखना होगा।

तकरार बढ़ने लगी।

इस कथोपकथन में भाव विभिन्नता रहने के कारण कितनी मनोरंजकता है। इससे मानों कथोपकथन में जान सी आ गई है। दोनों पात्रों की बातें किस प्रकार मन में आनन्द और कुतूहलता की सृष्टि करती है।

कथोपकथन का चौथा गुण उसकी भाषा का स्वाभाविक प्रवाह है।[1] लेखक यह दिखलाने की चेष्टा न करे कि वह भाषा का कितना अच्छा प्रयोग कर सकता है। यदि उसने भाषा के प्रयोग में ही कहानी की सारी शक्तियाँ लगा दीं तो ऐसा ज्ञात होगा कि पात्र नहीं वरन् लेखक ही बोल रहा है। अच्छे वार्तालाप में पाठक का ध्यान कथोपकथन की ओर तो खिंचता ही नहीं, उसका ध्यान जाता है स्वाभाविक भाव की ओर। कारण यही है कि लेखक भाषा के पचड़े में नहीं पड़ता। वह भाव के प्रदर्शन में अपनी सारी शक्तियाँ लगा देता है और फिर वह प्रदर्शन भी बहुत उपयुक्त शब्दों में होता है। जो पात्र जैसा होगा उसकी भाषा भी ठीक वैसी ही उसके अनुकूल होगी। जयशंकर प्रसाद की पुरस्कार शीर्षक कहानी में यद्यपि भाव की तीव्रता है पर भाषा स्वाभाविक नहीं हो सकी।

मधूलिका, एक कृषक बालिका कहती है:—

राजकुमार, मैं एक कृषक बालिका हूँ। आप नन्दन विहारी और

A philosopher is not expected to speak like a labouring man nor a buffoon to give expression to the thought of a theologian.

—Training for authorship.
Kleiser

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं एक पृथ्वी पर परिश्रम करके जीने वाली। आज मेरी स्नेह की भूमि पर से मेरा अधिकार छीन लिया गया है। मैं दुःख से विकल हूँ, मेरा उपहास न करो।

मैं कोशल नरेश से तुम्हारी भूमि तुम्हें दिलवा दूँगा।

नहीं, वह कोशल का राष्ट्रीय नियम है। मैं उसे बदलना नहीं चाहती। चाहे उससे मुझे कितना ही दुःख हो।

तब तुम्हारा रहस्य क्या है?

यह रहस्य मानव हृदय का है, मेरा नहीं। राजकुमार, नियमों से यदि मानव हृदय वाध्य होता तो आज मगध के राजकुमार का हृदय किसी राजकुमारी की ओर न खिंच कर एक कृषक बालिका का अपमान करने न आता। मधूलिका उठ खड़ी हुई।

पुरस्कार—जयशंकर प्रसाद

एक कृषक बालिका के मुख से इतनी परिष्कृत भाषा सुन कर हम दङ्ग रह जाते हैं। हमें तो यह स्पष्ट जान पड़ने लगता है कि मधूलिका नहीं पर लेखक महाशय इस अवतरण में अवश्य बोल रहे हैं। कथोपकथन में भाषा की उपयुक्तता हमें बाबू प्रेमचन्द में बहुत मिलती है।

वली बहादुर ख़ाँ की आँखों से अग्नि ज्वाला निकल रही थी। वे कड़ी आवाज़ से बोले, किसी ग़ैर की क्या मजाल कि मेरी चीज़ अपने काम में लाये।

रानी—वह आपकी चीज़ नहीं, मेरी है। मैंने उसे रणभूमि में पाया है और उस पर मेरा अधिकार है। क्या रणनीति की इतनी मोटी बात भी आप नहीं जानते।

ख़ाँ साहब—वह घोड़ा मैं नहीं दे सकता, उसके बदले में सारा अस्तबल आपको नज़र है।

रानी—मैं अपना घोड़ा लूँगी।

ख़ाँ साहब—मैं उसके बराबर जवाहरात दे सकता हूँ, परन्तु घोड़ा नहीं दे सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी—तो फिर इसका निश्चय तलवारों से होगा।

[रानी सारंधा—प्रेमचन्द]

इस कथोपकथन में हमें प्रत्येक शब्द बोलता हुआ जान पड़ता है। प्रत्येक शब्द में शक्ति है और वह पात्रों के मुख से उपयुक्त रूप से आ जाती है। ऐसा मालूम होता है मानों हमारी आँखों के सामने रानी और खाँ साहब की बातें हो रही हैं और प्रत्येक अपने अपने विचारों का सच्चा और स्वाभाविक प्रदर्शन कर रहा है। यहाँ पाण्डित्य की ओर लेखक का विचार नहीं है, उसका विचार है स्पष्ट और स्वाभाविक भाव-प्रदर्शन की ओर।

ऐसी स्थिति में लेखक को अपना व्यक्तित्व पात्र के व्यक्तित्व के साथ संबद्ध कर लेना चाहिए। इसके लिए लेखक को जीवन की अनेक परिस्थितियों का अध्ययन करना आवश्यक होगा और उसे यह जानना भी उचित होगा कि प्रत्येक समाज का आचार-विचार तथा साधारण व्यवहार क्या है। यहाँ तक उसे आवश्यकतानुसार प्रान्तीय बोलियाँ भी सीख लेनी चाहिए। न जानें किस समय कैसी आवश्यकता पड़ जाय। किसी नौकर की भाषा साहित्यिक भाषा नहीं हो सकती। उसकी तो वही भाषा होनी चाहिए जो वह प्रतिदिन जीवन के व्यवहार में प्रयोग करता है। ऐसा करने से कहानी में स्वाभाविकता की मात्रा बढ़ जायगी। किन्तु ऐसी स्थिति में एक बात का विचार अवश्य रखना होगा। वह यह कि ऐसी बोली में प्रान्तीयता की अधिक झलक न होनी चाहिए। बहुत संभव है उसे पाठक ठीक तरह से न समझ सकें, अथवा उससे उनका मनोरञ्जन न हो सके। ऐसा होने से कहानी का उद्देश्य अधिक अंशों में सफलीभूत न हो सकेगा। कहानी से तो प्रत्येक पाठक का जो साहित्यिक भाषा जानता है, मनोरञ्जन होना चाहिए। यदि प्रान्तीयता के कारण उसके मनोरञ्जन में व्याघात पहुँचता है तो उससे कहानी लेखक के कौशल पर कलंक चिह्न ही समझना चाहिए।

अतएव अब यह स्पष्ट हो जाता है कि इन चार गुणों से सज्जित होकर कथोपकथन का उद्देश्य चरित्रों का स्पष्ट चित्रण करना

२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कथा-भाग के प्रवाह में उत्तेजना देना है। अब हम कथोपकथन की कुछ विशेषताओं पर दृष्टिपात करेंगे।

किसी लक्ष्य को ध्यान में रख कर ही कथोपकथन की अवतारणा होती है। किसी घटना की सूचना अथवा किसी कार्य-व्यापार की सृष्टि अथवा किसी चरित्र का घटना पर प्रभाव, किसी पात्र के स्वभाव का तीव्र दिग्दर्शन, इन्हीं सब बातों के लिए कथोपकथन बड़ा अच्छा साधन है। पर एक बात है। इस कथोपकथन को अपने लक्ष्य की ओर शीघ्र ही पहुँचना चाहिए। एक क्षण में, एक मिनट में यह मालूम हो जाय कि कथोपकथन का क्या उद्देश्य है। जिस प्रकार एक तीर शीघ्रता से जाकर अपने लक्ष्य का बेधन कर देता है उसी प्रकार कथोपकथन को शीघ्रगामी होकर अपने उद्देश्य की पूर्ति उसी क्षण में कर लेनी चाहिए और तीर के लक्ष्य-बेध की नाईं कार्य की सिद्धि भी सर्वांश में हो जानी चाहिए। कार्य-सिद्धि होने पर कथोपकथन को उसी स्थान पर समाप्त हो जाना चाहिए। उसे बढ़ाना मानों कहानी के सौन्दर्य को नष्ट कर डालना है। कहानी तो कला का संक्षिप्त रूप ही है। उसमें बढ़ने की गुंजाइश ही कहाँ है? यदि कथोपकथन आवश्यकता से अधिक बढ़ता है तो यह जान लीजिए कि लेखक कहानी के तत्त्व से अनभिज्ञ है। उद्देश्य की पूर्ति होने पर कथोपकथन का बढ़ना कहानी के रूप को विकृत कर देता है।

कथोपकथन सदैव मनोरञ्जक, विनोदमय, और कुतूहलवर्धक होना चाहिए। यदि कथोपकथन में विनोद अथवा कौतूहल की सामग्री न रही तो कहानी अपने उद्देश्य की पूर्ति किस प्रकार कर सकेगी? कहानी को तो सदैव ही मनोरञ्जन करना है। अतएव उसमें सदैव ऐसी सामग्री रहनी चाहिए जो मन को प्रफुल्लित करने की शक्ति रखती हो। कथोपकथन के पढ़ने से ऐसा ज्ञात हो मानों आप परदे के पीछे से अपने मित्र अथवा किसी मनुष्य की मनोरञ्जक बातें सुन रहे हैं। यदि ऐसा नहीं हुआ तो सारी कहानी नीरस हो जायगी। पण्डित विश्वम्भरनाथ शर्मा ऐसे कथोपकथन लिखने में पटु हैं।

एक दिन उनके मित्र ने संयोगवश कह दिया, यार डाक्टर, तुमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो त्रिपाठी को 'वाई' से लिखा है, उससे वह ट्राइपेथी भी पढ़ा जा सकता है। डाक्टर साहब बोले, पढ़ा जा सकने के लिये ही लिखा है। देखिए, कितनी बढ़िया सूझ है। त्रिपाठी भी पढ़ा जा सके और ट्राइ-पेथी भी।

परन्तु ट्राइपेथी का मतलब क्या है?

तुम इतना भी नहीं जानते? ट्राइपेथी के अर्थ तीन पेथी के अर्थ चिकित्सा, अर्थात तीन प्रकार की चिकित्सा।

मित्र ने पूछा, तीन प्रकार की चिकित्सा कौन कौन?

डाक्टर साहब बड़े अभिमानपूर्वक बोले—एलोपैथी, होम्योपैथी, और वैदोपैथी। मैं इन तीनों का ज्ञाता हूँ।

वैदोपैथी क्या? मित्र ने पूछा।

वैदोपैथी वैद-चिकित्सा अर्थात् वैदक, यह शब्द भी मेरा बनाया हुआ है।

शब्द बड़ा सुन्दर है। परन्तु इस दशा में तुम्हें ट्राइपेथी न लिखकर ट्राइपेथ लिखना चाहिये था, तब उसका अर्थ त्रिचिकित्सक होता। ट्राइपेथी का तो अर्थ त्रिचिकित्सा है, यह ठीक नहीं।

डाक्टर साहब मुस्कुरा कर बोले, यही बारीकी तो तुम समझते नहीं। देखो ट्राइपेथ लिखने से अन्त का वाई निकालना पड़ता, अतएव वह त्रिपाठी न पढ़ा जा सकता, एक हानि तो यह होती। 'वाई' लिखने से हिन्दुस्तानी भाई त्रिपाठी पढ़ते हैं। कोई अँग्रेज़ आयेगा तो ट्राइपेथी पढ़ेगा। प्रथम तो वह अर्थ स्वयम् ही समझ जायगा। न समझेगा तो कोई चिन्ता नहीं, डाक्टर अथवा मिस्टर ट्राइपेथी तो कहेगा। यदि पूछेगा, तो कहूँगा यह मेरे वंश की उपाधि है। हमारा वंश मूर्तिमान चिकित्सा रहा है, इसलिए हमारा परिवार 'ट्राइपेथी' कहलाता है।

यह सुन कर मित्र महोदय चुप हो गए।

[ख़ब्त—श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक]

कथोपकथन में भाव-प्रदर्शन के लिए शब्द बहुत उपयुक्त और स्पष्ट होने चाहिए। शब्द और वाक्य इतने स्पष्ट और तीव्र हों कि आँखों के सामने एक भावात्मक चित्र खिंच जाय और ऐसा मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने लगे कि सारी बातों की चित्रावली सिनेमा के समान हमारे सामने हो रही है। एक एक शब्द अपना एक अलग चित्र रखता हो और उनका सम्मिलित समूह कथोपकथन की व्यंजक शक्ति को प्रतिक्षण बढ़ाता रहे।

अंग्रेजी में 'विद् आल दि फ़्यूरी अव् एन् आउटरेजस् सोल आई हेट यू।'

कितना तीव्र चित्र है।

एक मनोरंजक चित्र नीचे देखिए।

मित्र ने बैरिस्टर साहब की चेष्टा का मर्म समझ लिया और कहा—आप नाराज हो गए, जान पड़ता है। इसी से तो कहता हूँ कि आपने गधे की शक्ल तो कभी देखी नहीं है। जब काम से फ़ुरसत पाकर गधा आराम करने के लिए साए में बैठता है, तब उसकी मुखाकृति सचमुच बड़ी विलक्षण होती है। जान पड़ता है कि किसी तत्त्ववेत्ता की तरह वह किसी गूढ़ तत्त्व के चिन्तन में निमग्न हो। न कान हिलते हैं न पलक गिरती है। न वह मुँह चलाता है और न सिर हिलाता है। एकदम गंभीर भाव से बैठा रहता है। उसकी ध्यान-मग्न अवस्था को देख कर फ़िलासफ़र भी कुढ़ सकते हैं।

[बुद्धू—श्री कुलदीप सहाय]

गधे का कितना स्पष्ट और तीव्र चित्र है। चित्र की स्पष्टता ही में कथोपकथन का उत्कृष्ट रूप सन्निहित है।

कहानी लेखक को कथोपकथन कराने में एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। वह है रंगमञ्च पर पात्रों का भाव-प्रदर्शन। वार्तालाप नाटक का बड़ा भारी अंग है। बिना उसके तो नाटक हो ही नहीं सकता। वास्तव में कथोपकथन पहले नाटक की वस्तु है फिर कहानी अथवा उपन्यास की। नाटक के पात्र अपने विचार केवल दो साधनों से प्रकट कर सकते हैं। एक तो बात चीत के द्वारा और दूसरे हाव-भाव के द्वारा। किन्तु बातचीत में तब तक सौन्दर्य नहीं आ सकता जब तक कि वह हाव भाव से संयुक्त न हो। यह बात दूसरी है कि कभी कथन केवल बातचीत के द्वारा व्यक्त किया जाता है और कभी केवल हाव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव के द्वारा। किन्तु नाटक देखने वाले इस बात को स्वीकार करेंगे कि जब तक कथोपकथन में हाव की मात्रा न आएगी तब तक उस में प्रभावोत्पादक शक्ति का समावेश नहीं हो सकता। अतएव यह अत्यन्त आवश्यक है कि कहानी लेखक पात्र के कार्य-व्यापार को इतनी सूक्ष्म दृष्टि से देखे और उसके स्वरूप का इतनी स्पष्टता से चित्रण कर सके कि उसका महत्त्व सहज ही में पाठक के मन पर पड़ जाय और वह उस कार्य का अनुभव बिना किसी कठिनता के कर सके। इसलिए यदि कहानी लेखक कथोपकथन का समावेश कहानी में करता है तो यह आवश्यक है कि वह कथोपकथन का सौन्दर्य और महत्त्व बढ़ाने के लिए उसमें हाव की सृष्टि भी करे। बिना अभिनय के कथोपकथन का अस्तित्व ही नहीं है, क्योंकि कथोपकथन मुँह से बोल कर प्रकट करने की वस्तु है, सोचने की नहीं।

हिन्दी कहानियों में अभी ऐसी सूक्ष्म दृष्टि की सृष्टि नहीं ज्ञात होती जिसमें कार्य की अभिव्यक्ति अभिनय द्वारा की जाय। शायद हमारी कहानियों ने अपने शैशव काल में अभिनय सीखा ही नहीं। यहाँ केवल एक भाव को प्रधानता देकर कथोपकथन करा दिया जाता है।

बाबू साहब हँस कर बोले तुम्हारी जैसी सीधी स्त्री भी क्या कहूँ, तुम इन ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करती हो, जो दुनिया भर के झूठे और धूर्त हैं। ये झूठ बोलने ही की रोटियाँ खाते हैं।

रामेश्वरी—तुनक कर बोली—तुम्हें तो सारा संसार झूठा ही दिखाई पड़ता है। ये पोथी पुराण भी सब झूठे हैं?

[ताई – विश्वम्भर नाथ कौशिक]

महाराज ने स्थिर नेत्रों से देख कर कहा—सिंहमित्र की कन्या, फिर यहाँ क्यों?

[पुरस्कार—प्रसाद]

राजकन्या ने रुँधे कंठ एवं कंपित स्वर में कहा—पिता, मैंने जाना है, मुझे स्पष्ट सूचना मिली है कि उन तापस कुमार ने कल रात्रि को उस कारागार में प्राण त्याग किया है।

[पर्यवसान—हृदयेश]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रान्स और इङ्गलैण्ड की कहानियों में हमें अभिनय-चित्र बहुत अच्छे मिलते हैं। उनमें कार्य व्यापार का निरूपण इतनी अच्छी तरह से किया गया है कि हमें कथोपकथन के द्वारा ही कहानी का सारा सार समझ में आ जाता है। वास्तव में कथोपकथन का सारा अभिनय चित्र में ही सन्निहित है। हिन्दी कहानियों में कहीं कहीं अभिनय चित्र देखने को मिलते हैं। हमें आशा तो यह करनी चाहिए कि भविष्य में कथोपकथन का रूप अभिनय द्वारा ही निर्धारित हो।

सहसा सामने वाली खिड़की खुली और एक रमणी ने अपना मुँह बाहर निकाल कर उससे पूछा, क्यों मुझे क्यों पुकारते हो? मोहन ने विस्मित होकर कहा, तुम्हें?

रमणी ने रुष्ट होकर उत्तर दिया, हाँ मुझे। मैं ही नन्दिनी हूँ।

मोहन कुछ देर तक भय से स्तंभित रहा। फिर उसने विनय पूर्वक कहा, मुझे क्षमा करो मैं नहीं जानता था। मैं अपनी गाय को पुकार रहा था। उसका भी नाम नन्दिनी है।

रमणी ने भृकुटि संकुचित कर कहा—ऐसा? फिर तुरन्त ही खिड़की बन्द हो गई।

[नन्दिनी—पदुम लाल बख्शी]

मैंने अपनी वेदना दबाते हुए कहा—पाँच सौ रुपये

सरदार ने मुँह बिगाड़ते हुए कहा—नहीं इतना कम नहीं लेगा। दो हजार से एक पैसा भी कम मिला, तो तुम्हारी जान की खैर नहीं।

मैंने कुछ सोचते हुए कहा—सरकार इतना रुपये काले आदमी के लिए नहीं खर्च करेगी।

सरदार ने छुरा बाहर निकालते हुए कहा, तब फिर क्यों कहा था कि सरकार इनाम देगी। ले, तो फिर यहीं मर।

सरदार छुरा लिए मेरी तरफ़ बढ़ा।

[फ़ातिहा—प्रेमचन्द]

एक बार और पुलीस-पति ने गम्भीरता से धीरे से कहा—मैं मित्रता से आपसे निवेदन करता हूँ। आप इस परिवार से ज़रा साव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धान और दूर रहें। फ़िलहाल इससे अधिक मुझे कुछ कहना नहीं है।

[उसकी माँ—बेचन शर्मा उग्र]

दिवाकर ने कुर्ते के बटन में अपनी दुर्बल और पतली उँगलियाँ उलझाती हुई चन्द्रकला से पूछा—एक बात कहूँ ?

[हृदय की परीक्षा—मुक्त]

उसका शब्द सुन कर मुझ से नहीं रहा गया। मैंने जाकर द्वार खोला। वह सामने खड़ी मुस्कुरा ही रही थी। मुझे देख कर, उदासी की दशा में, वह अपने मुख को भी उदास करके बोली, आज द्वार क्यों बन्द था ?

यों ही। मैंने धीरे से कहा—

तबियत ख़राब है ? उसने चिन्ताजन्य विकलता से पूछा।

नहीं सो रहा था। तुम उदास न होओ, हँसो एक बार। कह कर मैं हँसने लगा।

[वेश्या का हृदय—धनीराम प्रेम]

आदि। इस प्रकार अभिनय कला का सामञ्जस्य कथोपकथन का सौन्दर्य कई अंशों में बढ़ा देता है।

अब हमें यही विचार करना है कि कहानी में कथोपकथन का क्या स्थान है।

कथोपकथन कहानी का अभिनय-सौन्दर्य है। उसी के सहारे पात्रों में जीवन की शक्तियाँ आती हैं। वे इस योग्य हो सकते हैं कि पाठकों के सामने बोल कर अपने हृदय के विचार प्रकट करें। वे केवल कला के पुतले न होकर जीवन के साथी हो जाते हैं। उन्हीं के द्वारा कार्य-व्यापार की सृष्टि होती है। अतएव इसी विचार से यह कहा जा सकता है कि कथोपकथन कहानी का एक आवश्यक अंग है। जिस कथोपकथन का तात्पर्य पात्रों में जीवन का आविर्भाव करना है उसका महत्त्व कहानी में अनेक साधनों का प्रतिपादक हो सकता है। सामाजिक और रहस्यमयी कहानियों के प्रारम्भ के लिए कथोपकथन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्तम साधन है। इससे मनोरंजन एवं कुतूहलता की सृष्टि बड़ी सरलता से हो सकती है।

अ—अब तो सुमित्रा का विवाह हो जाना चाहिए।
हां विवाह तो होना ही चाहिए, परन्तु...
परन्तु क्या, परन्तु क्या।
मैट्रिक की परीक्षा का नतीजा निकल आवे।
सो तो निकल ही आवेगा।
मई मास का दोपहर का समय है आदि।
[सुशिक्षा—विश्वम्भर नाथ शर्मा]

आ—

श्री ने हंसते हुए कहा आज आपके गुप्त प्रेम का हाल मालूम हो गया।

कैसा प्रेम ?

छिपा हुआ, जिसे आप नहीं जानते।

मैंने श्री की तरफ़ देखते हुए कहा, क्या बात है बतलाओ न ?

कुछ नहीं, लीला आज आपकी बड़ी प्रशंसा कर रही थी।

मुझ में कौन सा ऐसा गुण है जिसकी कोई प्रशंसा करेगा ?

आप के आकर्षण शक्ति की।

क्यों मेरा उपहास करती हो श्री, मैं तो किसी की तरफ़ देखता भी नहीं।

यदि आप की तरफ़ कोई देखे तो ?

तो मैं उसकी तरफ़ देखने की चेष्टा न करूँगा।

रहने दीजिए, ये सब आप की कोरी बातें हैं।

कुछ देर तक मैं विचार करने लगा।

इसी प्रकार सामाजिक और रहस्यमयी कहानियों के अन्त के लिए भी कथोपकथन सुन्दर साधन है। इस प्रकार के कथोपकथन से अन्त तक कुतूहलता चलती रहती है और कहानी अन्त में पाठक पर बहुत बड़ा असर छोड़ जाती है। रवीन्द्रनाथ की रिनन्सिएशन नाम की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी इसी ढङ्ग की है। गाई दी मीमांसा की नेकलेस कहानी भी इसी प्रकार कथोपकथन में अंत होती है।

अतएव यह स्पष्ट है कि अन्त की प्रभावोत्पादक कुतूहलता के लिए कथोपकथन एक शक्तिशाली साधन है। अंग्रेज़ी के एक लेखक एडविन वाइल्डमैन ने कथोपकथन का परिचय देते हुए लिखा है:—

It is the pistol shot in the twilight; the crash of thunder in the storm; the splash in the quiet stream; the knock at the door of the silent room; it is the action, life, vitality; dramatics of the story.

[कथोपकन झुटपुटे में पिस्तौल का शब्द है, वह तूफ़ान में बादल का गर्जन, नीरव निर्झर में आन्दोलन, शान्त कमरे के दरवाज़े का खटखट शब्द है। वह कथा का कार्य, जीवन, शक्ति और अभिनय है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी संसार

(श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल संग्रहमन्त्री)

राष्ट्र भाषाका महत्व—

राष्ट्रपति बाबू सुभाषचन्द्र वसुने कलकत्तेमें व्याख्यान देते हुए कहा, हिन्दुस्तानी की शिक्षाका विशेष महत्व है। मद्रासके हिन्दी विरोधियों का आन्दोलन राष्ट्र की भलाईके लिये बहुत ही घातक है। इस विरोध-प्रदर्शनमें जो रुख दिखाया गया है वह बहुत ही बुरा है। क्योंकि उससे हमारी राष्ट्रीयप्रगति रुकती है। हिन्दुस्तानी की शिक्षाके महत्व की बात अनुमान से बाहर नहीं कही जा सकती। यह अन्तर्प्रान्तीय विचार विनिमयका काम करेगी और भारतकी राष्ट्रभाषा होगी। इस तरह यह हमारी राष्ट्रीय एकताको दृढ़ करेगी। इसलिये अपनी स्वतन्त्रता की मंजिलमें इसकी वजह से हम थोड़ा आगे बढ़ सकेंगे।

प्रगतिशील साहित्य—

मासिक विश्वमित्र ने अपनी एक टिप्पणीमें लिखा है कि एक प्रश्न है कि हमारे साहित्यिकोंमें साहित्यके प्रति दर्द नहीं है। हमारे साहित्यिक दो चार कहानियां, एकआध उपन्यास तथा चन्द पद्य लिखकर अपने को साहित्यिक घोषित कर लेते हैं। फलतः वे ऐसे साहित्य, जो जीवन को अनुप्राणित करे—उसमें स्पन्दन लाये, सृजन करने में असमर्थ हो रहे हैं। इसका कारण यह है कि इस सृष्टिमें न तो उनकी साधना है और न वेदना। यदि कुछ है तो अर्थ और यश की लिप्सा। हमारे साहित्यमें आज वृहत् चिन्ता, महान् आदर्श, विपुल अनुभूति, देश-काल और जीवनको उन्नत करने की उत्कट प्रेरणा तथा मानव भावनाओं के प्रकाशन की तीव्र उत्कण्ठाका अभाव है। उपर्युक्त अभियोग को मिथ्या नहीं कहा जा सकता। किन्तु इसके लिये ज़िम्मेदार कौन है। अर्थ-संकटके ज़मानेमें साहित्य निर्माता अपनी आवश्यकताओं और अभावों की उपेक्षा करके बाज़ार मूल्य की परवाह किये बिना कैसे रह सकते हैं। इसीसे हमारा साहित्य हमारे जीवन निर्माणमें हमारा सहायक नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो पाता। ऐसी परिस्थितियों के सिवाय हमारे साहित्यके दुर्भाग्य से हमारी प्रकाशन संस्थाएं उस आदर्श को लेकर सञ्चालित नहीं होतीं जिसके भीतर समाज और मानवके उत्थान की भावना हो। बल्कि वे मानव कमजोरियों से ही लाभ उठाना चाहते हैं। राष्ट्रनिर्माण की गति की शिथिलता इसका एक बहुत बड़ा परिणाम है। ऐसी दशामें साहित्य निर्माताओं—लेखक प्रकाशक और पाठकोंके दृष्टिकोणमें परिवतन होने की आवश्यकता है।

सर मुहम्मद उसमान के विचार—

स्वर्गीय ए. रंगस्वामी आयंगर की मूर्तिका उद्घाटन करते हुए सर मुहम्मद उसमान ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभामें कहा। मैं अब तक यह समझनेमें असमर्थ हूँ कि हिन्दी या हिन्दुस्तानी का ज्ञान प्राप्त करनेसे तामिल भाषा या साहित्य पर उसका बुरा असर कैसे पड़ेगा। ऐसी कल्पना करना बिलकुल निराधार है और उसमें कुछ भी तथ्य नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषाके प्रचारमें कुछ कठिनाइयाँ हैं; पर उन कठिनाइयोंको उचित रूपसे हल करना चाहिये। उत्तर भारतके लोग चाहे हिन्दू हों या मुसलमान यही भाषा बोलते हैं।

प्रस्ताव अस्वीकृत—

अभी दिल्लीमें आल इण्डियां कांग्रेस कमेटी की मीटिंग हुई थी उसमें डाक्टर अशरफ ने एक प्रस्ताव उपस्थित किया था, जिसका भाव यह था कि समस्त भारतके लिये राष्ट्रभाषाका प्रश्न बड़े महत्वका है और चूंकि हिन्दी-उर्दू विवाद साम्प्रदायिक रूप ग्रहण कर रहा है और चूँकि कांग्रेस द्वारा ग्रहण किये गये रुखको उचित रूपसे पसन्द नहीं किया गया है; इसलिये यह कमेटी इस बात पर ज़ोर देती है कि कांग्रेस हिन्दुस्तानीको जो देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियोंमें लिखी जायगी, भारतकी राष्ट्रभाषा माननेकी पक्षपातिनी है और समस्त कांग्रेस जनोंको आदेश करती है कि वे हिन्दुस्तानीका प्रचार करें और हिन्दी-उर्दूके विवादमें पड़नेसे अलग रहें। इसलिये यह कमेटी हिन्दुस्तानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रचारके लिये एक स्कीम तैयार करने तथा कांग्रेसके आगामी अधिवेशनके पहले अपनी रिपोर्ट देनेके लिये एक हिन्दुस्तानी बोर्ड नियुक्त करती है। इस बोर्डमें अशरफ साहब, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, मौलाना अबुलक़लाम आज़ाद, डाक्टर मौलवी अबुलहई, आचार्य नरेन्द्रदेव तथा माननीय पुरुषोत्तमदास टण्डन को रखना चाहते थे। आपने इसके समर्थनमें कहा कि संयुक्त राष्ट्रका निर्माण करनेके लिये और दोनों साम्प्रदायोंको एक सूत्रमें बाँधनेके लिये और विवाद की शान्तिके लिये यह प्रस्ताव आवश्यक है। अन्य कई सज्जनों ने इस पर भाषण किया अन्तमें प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ।

युनिवर्सिटीमें हिन्दुस्तानी—

आगरा युनिवर्सिटीकी कार्यकारिणी कौंसिल ने हिन्दुस्तानीके माध्यम पर विचार कर निश्चय किया है कि सिद्धान्त: किसी देश की शिक्षाका माध्यम वहाँ की राष्ट्रभाषा होनी चाहिये। इसके लिये एक लिपि और एक ही शब्द भण्डार हो। हिन्दुस्तानीका अर्थ कौंसिल ठीक नहीं समझ सकी। मध्यभारतमें लोग हिन्दी-उर्दू मिली भाषाको नहीं समझ सकते। अत: इन प्रान्तोंमें ऐसी भाषाको शिक्षाका माध्यम नहीं बनाया जा सकता। इसलिये केवल हाई स्कूलोंतक अभी माध्यमका परिवर्तन हो। अभी हिन्दुस्तानीमें क़ानून की शिक्षा नहीं दी जा सकती। योग्यताकी दृष्टिसे अभी अन्य प्रान्तके परीक्षकोंसे काम लेना ही पड़ेगा; किन्तु वे लोग हिन्दुस्तानीसे अनभिज्ञ हैं। हिन्दुस्तानी माध्यम हो किन्तु अन्य देशी भाषाओं की उपेक्षा न की जाय।

पार्लिमेंटके मेम्बरका मत—

ब्रिटिश पार्लिमेंट के मेम्बर श्री० टी०एम० जोंस ने मद्राससे विदा होने के पूर्व एक पत्र प्रतिनिधि से कहा कि भारतको इस समय सबसे अधिक आवश्यकता राष्ट्रभाषाकी है। जिससे राष्ट्रीय सांस्कृतिक जीवन और सामाजिक आकांक्षाओंको व्यक्त किया जा सके, हिन्दुस्तानी भविष्य में भारतकी मातृभाषा होने के सर्वथा योग्य है। मेरी समझमें मद्रासकी प्रथम कांग्रेसी सरकारका कर्तव्य था कि वह हिन्दी की पढ़ाई अनि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113056

वार्य कर दे। मैं मन्त्रियों को उनके इस कार्य पर बधाई देता हूँ। अब समय आ गया है कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी अन्य कांग्रेसी प्रान्तोंमें हिन्दी की पढ़ाई माध्यमिक स्कूलोंमें अनिवार्य कर दे।

हिन्दुस्तानी, हिन्दी और उर्दू।

महात्मा गांधी की विचार-धारा।

श्री मान महात्मा गांधी जी हरिजन में लिखते हैं—

हिन्दी-उर्दू प्रश्न पर कटु विवाद चल पड़ा है और अभी भी चल रहा है, यह बड़े अफ़सोस की बात है। जहां तक काँग्रेस का संबन्ध है, हिन्दुस्तानी ही वह भाषा है जिसे उसने अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्क के लिये बाजाब्ता अखिल भारतीय भाषा स्वीकार किया है। जिन कांग्रेस जनों को सारे हिन्दुस्तान में काम करना पड़ता है वे अगर दोनों लिपियों में हिंदुस्तानी सीखने का कष्ट उठायें, तो अपने सामान्य भाषा के लक्ष्य की ओर हम बहुत कुछ आगे बढ़ जावेंगे। क्योंकि असली प्रतिस्पर्धा तो हिंदी और उर्दू में नहीं, बल्कि हिंदुस्तानी और अंग्रेजी में है। वही करारा मुक़ाबला है। मैं तो उसके लिये निश्चय ही बड़ा चिंतित हूँ।

हिंदी-उर्दू विवाद का कोई आधार नहीं है। हिंदुस्तानी के बारे में काँग्रेस की जो धारणा है उसको अभी मूर्तरूप प्राप्त होना है। और ऐसा तब तक नहीं होगा जब तक कि काँग्रेस की कार्रवाई एक मात्र हिंदुस्तानी में न होने लगेगी।

हिन्दुस्तानी को मूर्तरूप देने के लिये हिन्दी और उर्दू को उसकी पोषक भाषाएँ समझना चाहिये। इसलिये काँग्रेस जनों को इन दोनों के प्रति अच्छे भाव रखने चाहिये और जहाँ तक बन सके दोनों के ही संपर्क में रहना चाहिये।

प्रान्तीय भाषाओं में समृद्ध एक उन्नतशील राष्ट्र की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इस हिन्दुस्तानी को अनेक पर्यायवाची शब्द मुहैया करने पड़ेंगे। बङ्गाल या दक्षिण के श्रोताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सामने जो हिन्दुस्तानी बोली जायगी उसमें स्वभावत: संस्कृत से उत्पन्न शब्दों का प्राचुर्य होगा । वही भाषण जब पञ्जाब में किया जायगा तो उसमें अरबी-फ़ारसी से पैदा हुए शब्दों की काफ़ी मिलावट होगी । यही हाल उन श्रोताओं के सामने होगा जिनमें मुसलमानों की ज़्यादा तादाद होगी ।

काँग्रेस से स्वतन्त्र रूप में, हिन्दी और उर्दू बराबर समृद्धि करती रहेंगी । हिन्दी ज़्यादातर हिन्दुओं में और उर्दू मुसलमानों में महदूद रहेंगी । तुलनात्मक रूप में कहें तो, दरहक़ीक़त हिन्दी जाननेवाले ऐसे मुसलमान बहुत कम हैं जिन्हें उसका पंडित कहा जा सके, हालांकि मैं उम्मीद यह करता हूँ कि हिन्दी भाषी भागों में पैदा होने वाले मुसलमानों की मादरी जबान हिन्दी ही है । हाँ, हिन्दू हजारों ऐसे हैं जिनकी मातृभाषा उर्दू है और उनमें से सैकड़ों ऐसे भी हैं जिन्हें उर्दू का पंडित भी कहा जा सकता है । पंडित मोतीलालजी ऐसे ही थे । डा० तेज बहादुर सप्रू को भी हम ले सकते हैं । ऐसे उदाहरण और भी बहुत से मिल सकते हैं । इसलिए कोई वजह नहीं कि इन दो बहिनों में कोई झगड़ा तथा कटु प्रतिस्पर्धा हो । हाँ, प्रेमभरी प्रतिस्पर्धा तो हमेशा ही होनी चाहिए ।

लेकिन इस तास्सुब का अन्त निश्चित है क्योंकि दोनों जातियों के बीच की मौजूदा नाइत्तफ़ाक़ी सारी बीमारियों की भाँति अस्थायी ही है । अच्छा हो या बुरा, पर ये दोनों जातियाँ तो हिन्दुस्तान की हो चुकी हैं, वे एक दूसरे की पड़ोसी हैं और इसी देश की सन्तान हैं । यहीं वे पैदा हुई हैं और यहीं मरेंगी । इसलिये ख़ुद-ब-ख़ुद ही वे शांति से न रहने लगीं, तो क़ुदरत इसके लिये उन्हें मजबूर करेगी ।

और जो कुछ हाल हिन्दुओं का है वही मुसलमानों का है । मुसलमान अगर हिन्दी-साहित्य सम्मेलन और नागरी-प्रचारिणी सभा के विनम्र परिश्रम के फलों का उपयोग न करें, तो यह उनका क़ुसूर है । यह बड़े दु:ख की बात है कि सम्मेलन ने हिन्दी की यह व्याख्या करके, कि वह भाषा जो उत्तर-भारत में हिन्दू मुसलमानों द्वारा बोली जाती है और जो उर्दू तथा देवनागरी लिपियों में लिखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा सकती है, अपनी ओर से जो बड़ा क़दम उठाया है उसकी मुसलमानों ने फ़ख्र और ख़ुशी के साथ दाद नहीं दी है। इस तरह, जहाँ तक इस व्याख्या का सम्बन्ध है, काँग्रेस ने हिन्दुस्तानी की जो व्याख्या की है उसका इससे मेल बैठ जाता है। यह मैं जानता हूँ कि ऐसे भी कुछ लोग हैं जो इस बात का सपना देखते हैं कि यहाँ खाली उर्दू तथा ख़ाली हिन्दी ही रहेगी। लेकिन मेरा ख़्याल है कि यह अपवित्र सपना है और सदा सपना ही रहेगा। इस्लाम की अपनी ख़ास संस्कृति है, इसी तरह हिन्दू धर्म की भी अपनी संस्कृति है। भावी भारत में इन दोनों संस्कृतियों का पूर्ण और सुखद संमिश्रण रहेगा। जब वह शुभ दिन आयेगा, तब हिन्दू मुसलमानों को सामान्य भाषा हिन्दुस्तानी होगी। लेकिन उर्दू फिर भी अरबी-फ़ारसी शब्दों की बाहुल्यता के साथ फलती-फूलती रहेगी और हिन्दी अपने संस्कृत शब्दों के भारी भण्डार के साथ फूले फलेगी। शिबली ने जिस भाषा में लिखा है वह मर नहीं सकती, उसी तरह तुलसीदास और सूरदास की भाषा भी नहीं मर सकती। लेकिन उन दोनों की अच्छाइयाँ हिन्दुस्तानी जबान से बिलकुल घुल-मिल जायँगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषय

१

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की

मध्यमा (विशारद) परीक्षा की पढ़ाई के लिए प्रबन्ध

१० नवंबर १९३८ से प्रारंभ

हिन्दी विद्यापीठ बंबई की ओर से ऊपर लिखी गई तारीख़ से मध्यमा परीक्षाकी पढ़ाई के लिए प्रबन्ध हो चुका है। उम्मेदवार विद्यार्थी व विद्यार्थिनियाँ अपने उम्मेदवारी-पत्र ता० ८ नवंबर तक संयोजक — हिन्दी विद्यापीठ, हीरा बाग़, सी० पी० टैंक, गिरगाँव के पते पर भेज दें। महिलाओं के लिए प्रातःकाल अलग वर्ग रहेगा।

स्थान— सरदार हाई स्कूल, ठि० आईमाय पीरोजशाह बिल्डिंग खेतवाड़ी १२ वीं गली।

समय— रात्रिको ७॥ से ९॥ बजे तक (स्टे० रा०) प्रतिदिन जो विद्यार्थी रात्रि को पढ़ने न आ सकेंगे उनके लिए दोपहर को २-२ घंटे शनिवार और रविवार के दिन अलग वर्ग रक्खा गया है। विशेष जानकारी के लिए छपी नियमावली मुफ़्त मिल सकती है

निवेदक

भानुकुमार जैन

संयोजक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२

हिन्दी-विद्यापीठ बंबई

प्रस्ताव

(१) बंबई-सरकार ने हिन्दुस्तानी को इस प्रान्त की भाषा मानकर उसके लिये सहायता देने की घोषणा की है तथा हिन्दुस्तानी स्कूल-बुक-कमेटी की स्थापना की है—इसके लिए 'हिन्दी विद्यापीठ' बंबई-सरकार को धन्यवाद देती है और शिक्षा-मन्त्री तथा 'हिन्दुस्तानी स्कूल-बुक कमेटी' के सदस्यों का ध्यान आकर्षित करते हुए निवेदन करती है कि—

अभी तक हिन्दुस्तानी भाषा का कोई भी मान (Standard) निश्चित नहीं हुआ है। इसलिये कमेटी पाठ्य-पुस्तकों के चुनाव या निर्माण में इस बात का ध्यान रखेगी कि उनकी भाषा फ़ार्सी और अरबी के भारी भारी अप्रचलित शब्दों से न भरी जाकर संस्कृत के प्रचलित शब्दों से युक्त हो। और उसमें बोलचाल की भाषा का व्यवहार अधिक किया गया हो।

(२) हिन्दी विद्यापीठ बंबई इस प्रान्त के प्रधान सचिव और शिक्षा-मन्त्री तथा हिन्दुस्तानी स्कूल-बुक-कमेटी के सदस्यों से यह अनुरोध करती है कि निम्नलिखित हिन्दी साहित्य और भाषा के विद्वानों में से कम से कम किन्हीं एक अथवा अधिक सज्जनों को उक्त (हिन्दुस्तानी स्कूल-बुक-कमेटी) कमेटी में चुने।

(१) श्रीयुत डा० मोतीचंद पी० एच० डी० क्यूरेटर, प्रिंस-ऑफ़-वेल्स म्यूजियम, बंबई।

(२) श्रीयुत रणछोड़ लाल ज्ञानी एम० ए०, एम० आर० ए० एस० क्यूरेटर, प्रिंस-ऑफ़ वेल्स म्यूजियम, बंबई।

(३) डा० पी० आचार्य नेचुरोपैथ और नागरी (हिन्दी बालबोध) लिपि के सब से बड़े विशेषज्ञ तथा विशेष सुंदर लिपियों के

४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आविष्कारक । पता—C|0 हिन्दी-पुस्तक भंडार, हीराबाग़, बंबई नं० ४।

(४) ठाकुर राजबहादुरसिंह संपादक-श्रीवेङ्कटेश्वर समाचार, बंबई और अनेक हिन्दी-पुस्तकों के लेखक।
पता—श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, खेतवाड़ी ७वीं गली, बंबई नं० ४।

(५) डा० धनीराम 'प्रेम' एम० आर० सी० एस० और एल० आर० सी० पी० अनेक पुस्तकों के रचयिता और हाउस-सर्जन, दी भाटिया जनरल हास्पिटल, तारदेव, बंबई।

(६) श्रीयुत नाथूराम 'प्रेमी' गंभीर-विद्वान, हिन्दी के एक मात्र सर्वश्रेष्ठ प्रकाशक और अध्यक्ष—हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग़, बंबई नं० ४।

३

श्री किशोरीदास वाजपेयी ने लिखा है :—

सम्मेलन का यह प्रस्ताव कार्यरूप में लाना चाहिए:—

हिन्दी में फ़ारसी आदि भाषाओं से आए हुए काग़ज़, फ़ायदा आदि शब्दों के नीचे बिन्दी लगा कर लिखना भाषा के स्वरूप को बिगाड़ना तथा क्लिष्टता बढ़ाना है; इसलिये इस सम्मेलन की राय में ऐसे शब्दों के नीचे बिन्दी लगा कर लिखने की प्रथा छोड़ देनी चाहिए और लोक-व्यवहार के अनुसार यथासंभव तद्भव रूपों को ही ग्रहण करना चाहिए।

प्रस्तावक—श्री किशोरीदास वाजपेयी
समर्थक—श्री कृष्णकान्त मालवीय
श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित
श्री सीताराम चतुर्वेदी

बहुमत से स्वीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-रत्न-भंडार की दो योजनाएँ

साहित्य-सन्देश

साहित्य-सन्देश का दिसंबर का अङ्क कुछ परिवर्तित रूप में अभी प्रकाशित हुआ है। समालोचना-क्षेत्र में साहित्य-सन्देश ने जो काम अपने इस अल्प-जीवन में किया है, उसकी प्रशंसा आज सभी विद्वान कर रहे हैं। सच बात तो यह है कि आधुनिक साहित्य की समालोचना में इस पत्र ने अपना स्थान बना लिया है। निष्पक्ष समालोचनाओं और उसी ढङ्ग के लेखों का प्रकाशित करना ही पत्र का उद्देश्य है। यही कारण है कि आज ऐसी कोई संस्था या पुस्तकालय शायद ही हो, जिसमें यह पत्र न पहुँचता हो। हिन्दी के उच्च कक्षाओं के विद्यार्थी तो इस पत्र को अपना जीवन-प्राण समझने लगे हैं। इसी अङ्क से पत्र के कलेवर तथा अन्तरंग और बहिरंग दोनों को अधिक-तर आकर्षक बनाने की चेष्टा की गई है। ऐसे सुन्दर पत्र का वार्षिक मूल्य केवल २) रक्खा गया है। विद्यार्थियों, शिक्षा-संस्थाओं और पुस्तकालयों से तो एक ही रुपया लिया जाता है। एक रुपये की यह रियायत संभवत: अधिक दिन तक जारी न रक्खी जा सके—क्योंकि इसमें लागत भी नहीं आती—केवल प्रचार की भावना से ऐसा किया गया है। २००० ग्राहक होने के बाद तो निश्चय ही यह रियायत हटा ली जायगी। अतएव जो संस्थाएँ या विद्यार्थी इस सुविधा से लाभ उठाना चाहें, उन्हें शीघ्रता करनी चाहिए। पत्र का संपादन हिन्दी के धुरन्धर विद्वान और समालोचक बा० गुलाबरायजी एम० ए० व श्री महेन्द्रजी कर रहे हैं।

समालोचनात्मक ग्रन्थ

हिन्दी साहित्य में समालोचनात्मक ग्रन्थों की कितनी कमी है, वह किसी से छिपा नहीं है। इस कमी की यथाशक्ति पूर्ति करने के लिए हमने एक ग्रन्थ-माला निकालना शुरू किया है जिसमें अभी तक श्री० मैथिलीशरण गुप्त, कविवर प्रसाद, पं० सुमित्रानन्दन पन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राजकुमारी जेबुन्निसा पर पुस्तकें निकल चुकी हैं। पं० प्रताप-नारायण मिश्र पर एक पुस्तक आजकल छप रही है। एक छोटा साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास तथा दो आलोचनात्मक लेख-संग्रह भी छप चुके हैं। हमारा इरादा यह है कि हिन्दी के सभी उच्च कोटि के लेखकों तथा कवियों पर इसी प्रकार के ग्रन्थ लिखाये जायँ, जो क़रीब २०० पृष्ठ के हों। हिन्दी में इस तरह के साहित्य की बड़ी जरूरत है। अतएव हम हिन्दी के विद्वान् समालोचकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं और चाहते हैं कि जो सज्जन इस प्रकार की पुस्तकें लिख सकें, या जो इस प्रकार की पुस्तक लिख चुके हों, वे कृपा कर हम से पत्रव्यवहार करें। हम यथासंभव उनका आदर-सत्कार करके उन पुस्तकों का प्रकाशन करना चाहते हैं। पुस्तकें बहुत सुन्दरता पूर्वक छापी जायँगी और अधिक-से-अधिक प्रचार करने की चेष्टा की जायगी। इस संबन्ध में जो लोग लिखा पढ़ी करना चाहें, वे जल्दी करें क्योंकि हम १५-२० पुस्तकें लिखने का काम इसी महीने में उपयुक्त विद्वानों के सुपुर्द कर देना चाहते हैं।

पत्रोत्तर का पता—

संचालक—साहित्य-रत्न-भंडार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

सत्ताइसवीं स्थायी समिति का प्रथम अधिवेशन

स्थायी समिति का प्रथम अधिवेशन रविवार आश्विन सौर ३०-सं० १९९५ तदनुसार ता० १७ अक्टूबर १९३८ को १ बजे दिन से सम्मेलन कार्य्यालय में हुआ।

३—प्रधान मंत्री ने भिन्न भिन्न समितियों के निर्वाचन का विषय उपस्थित किया। नियम २२ के अनुसार निम्नलिखित सज्जन कार्य्य समिति के सदस्य चुने गए:—

१—श्री नरदेव शास्त्री
२— " राम बहोरी शुक्ल
३— " अयोध्या नाथ शर्मा
४— " कृष्णदेव प्रसाद गौड़
५— " उदयनारायण तिवारी
६— " काका कालेलकर
७— " ब्रजराज जी
८—श्रीमती चन्द्रावती त्रिपाठी
९—श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी
१०— " श्रीनाथ सिंह

४—उपनियम १८ के अनुसार निम्नलिखित सज्जन हिन्दी विश्व-विद्यालय परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुये:—

१—श्री गुरुप्रसाद टण्डन
२— ,, गुलाबराय
३— ,, रामबहोरी शुक्ल
४— ,, काका कालेलकर
५— ,, पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६— श्री गिरिजादत्त शुक्ल
७— ,, जयचन्द्र विद्यालंकार
८— ,, कृष्णदेव प्रसाद गौड़
९— ,, किशोरीदास बाजपेयी
१०— ,, संगमलाल अग्रवाल
११— ,, केशव प्रसाद मिश्र
१२— ,, भगीरथ प्रसाद दीक्षित
१३— ,, लाल बहादुर शास्त्री
१४— ,, क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय
१५— ,, ज्योति प्रसाद मिश्र
१६—श्रीमती कमला देवी शर्मा
१७—श्री सीताराम पाण्डेय
१८— ,, रामबालक शास्त्री
१९— ,, भगवती प्रसाद बाजपेयी
२०— ,, केदारनाथ मिश्र

५—उपनियम ३० के अनुसार निम्नलिखित सज्जन साहित्य समिति के सदस्य निर्वाचित हुए:—

१—श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन
२— ,, उदयनारायण तिवारी
३— ,, लक्ष्मीधर बाजपेयी
४— ,, सत्यनारायण पाण्डेय
५— ,, गुलाब राय
६— ,, भगवती प्रसाद बाजपेयी

६—उपनियम ३६ के अनुसार निम्नलिखित सज्जन प्रचार समिति के सदस्य निर्वाचित हुए:—

१—श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन
२— ,, दयाशंकर दुबे
३— ,, लक्ष्मीधर बाजपेयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—श्री सीताराम चतुर्वेदी
५— ,, ब्योहार राजेन्द्र सिंह
६— ,, जनार्दन मिश्र
७— ,, काका कालेलकर
८— ,, धुरेन्द्र शास्त्री
९— ,, कुँवर हरिप्रसाद सिंह, बांदा
१०— ,, धीरेन्द्र वर्मा
११— ,, रामेश्वर दयालु द्विवेदी
१२— ,, झम्मीलाल पाण्डेय
१३— ,, राजनाथ पाण्डेय
१४— ,, ब्रजभूषण शुक्ल

७—उपनियम ४३ के अनुसार संग्रह समिति के लिये निम्नलिखित सज्जन सदस्य निर्वाचित हुए :—

१ श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन
२ " रायकृष्ण दास
३ " रामचन्द्र टण्डन
४ " ब्रजमोहन व्यास
५ " ओंकार प्रसाद भटनागर
६ " वासुदेव शरण अग्रवाल
७ " प्रयाग दयाल
८ " मदनमोहन नागर
९ " लक्ष्मीधर बाजपेयी
१० " राहुल सांकृत्यायन.
११ " सत्यप्रकाश
१२ " प्रयागदत्त शुक्ल
१३ " बनारसीदास चतुर्वेदी
१४ " दुर्गाप्रसाद

८—सभापति जी की स्वीकृति के अनुसार प्रधान मन्त्री ने विभिन्न पारितोषिक समितियों के संगठन का विषय उपस्थित किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि पारितोषिक के रुपये जब तक कार्य्यालय में न आ जायँ तब तक एतदर्थ निर्मित समितियाँ कोई कार्य्यवाही न करें।

९—प्रधान मन्त्री ने शिमला अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्तावों को कार्य्यवाही के लिये उपस्थित किया :—सर्वसम्मति से प्रत्येक प्रस्ताव की कार्य्यवाही के लिये समिति ने अपना निश्चय बताया।

१०—प्रधान मन्त्री ने नारंग पुरस्कार तथा रत्नकुमारी पुरस्कार की नियमावली का विषय उपस्थित किया। सर्वसम्मति से इनकी स्वीकृति का अधिकार कार्य्य समिति को दिया गया।

११—श्री मनदगोपाल एडवोकेट मुरादाबाद के प्रस्तावानुसार प्रधान मन्त्री ने स्थायी समिति के सदस्यों को सम्मेलन द्वारा मार्ग व्यय दिये जाने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि धनाभाव के कारण समिति इस पर विचार करने में असमर्थ है।

तद्पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

बाबूराम सक्सेना
एम० ए०, डी०-लिट्
प्रधान-मन्त्री

कार्य समिति का प्रथम अधिवेशन

कार्य समिति का प्रथम अधिवेशन रविवार कार्तिक सौर २० सं० १९९५ तद्नुसार ता० ६ नवम्बर १९३८ को संग्रहालय भवन में १ बजे दिन से हुआ।

१—प्रधान मन्त्री ने शिमला में स्वीकृत नवें प्रस्ताव के अनुसार पंजाब तथा दिल्ली में प्रचार कार्य्य के लिये समिति बनाने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन तथा श्री जयचन्द्र विद्यालंकार आगामी कार्य समिति में उक्त प्रचार समिति के लिए सदस्यों की सूची पेश करें।

२—प्रधान मन्त्री ने सम्मेलन पत्रिका के बजट की बढ़ती का विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपस्थित किया। निश्चय हुआ सुलभ साहित्य माला की आय से १२५) दिये जायँ।

३—प्रधान मन्त्री ने सहायक मन्त्री और साहित्य तथा प्रचार लेखक की नियुक्ति का विषय उपस्थित किया। समिति ने इसके लिये पांच सज्जनों की एक समिति बनाई जो कार्य्यालय के कार्य्य का निरीक्षण करके आगामी कार्य्य समिति में अपनी रिपोर्ट उपस्थित करेगी।

४—प्रधान मन्त्री ने संग्रहालय की नियमावली की स्वीकृति का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि यह आगामी बैठक में विभागीय मन्त्री तथा प्रधान मन्त्री की रिपोर्ट सहित पेश हो।

५—संग्रहालय मन्त्री ने भवन में अब तक के समस्त प्रधान मन्त्रियों के फोटो रखने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि प्रधान मन्त्रियों के पूर्ण चित्र तथा प्रत्येक वर्ष के मन्त्रिमण्डल के समुदाय चित्र (ग्रूप फोटो) रक्खे जायँ।

६—संग्रह लेखक श्री रामचन्द्र शुक्ल का एक मास का सवेतन अवकाश स्वीकार किया गया।

७—प्रधान मन्त्री ने साहित्य सदन अबोहर (पंजाब) के निरीक्षण की रिपोर्ट सूचनार्थ उपस्थित की।

८—हिन्दी साहित्य समिति, देहरादून सम्मेलन की सम्बद्ध सभा स्वीकार हुई।

१०—नारंग पुरस्कार तथा रत्न कुमारी पुरस्कार की नियमावली निम्नलिखित रूप में स्वीकार हुई।

नारंग-पुरस्कार
की
नियमावली

१—हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से प्रतिवर्ष १०० रुपए का 'नारंग-पुरस्कार' पंजाब निवासी किसी हिन्दी कवि को "भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति" विषय पर उनकी रचित उच्च कोटि की कविता के सम्मानार्थ दिया जायगा। यह पुरस्कार साधारणतः सम्मेलन के अधिवेशन में भेंट किया जायगा। किन्तु यदि पुरस्कार पाने के अधिकारी अधिवेशन में उपस्थित न हो सकें तो वहाँ उनका नाम प्रकट कर दिया जायगा। कविता कम से कम १०० पंक्तियों की अवश्य होनी चाहिए।

'पंजाब निवासी' शब्द से उस व्यक्ति का बोध होगा जिसका जन्म पंजाब में हुआ हो और जो साधारणतः उसी प्रान्त में रहता हो।

(२) पूरा पुरस्कार किसी एक लेखक को मिलेगा। एक से अधिक लेखकों में बाँटा न जायगा।

लेखक अथवा इसी अर्थ के बोधक अन्य पुल्लिंग शब्दों के अन्तर्गत लेखिकाएँ भी मानी जायँगी।

(३) पुरस्कार पाने वाले को पुरस्कार के साथ सम्मेलन के अवसर पर एक प्रमाण-पत्र भी दिया जायगा।

(४) प्रति वर्ष स्थायी समिति द्वारा 'नारंग-पुरस्कार समिति' का संगठन हुआ करेगा। इसमें कुल पांच सदस्य रहेंगे, जिनमें एक श्री गोकुलचन्द नारंग जी या उनके कोई प्रतिनिधि अवश्य होंगे। नारंग-पुरस्कार समिति नियमानुसार पुरस्कार का प्रबन्ध करेगी। समिति का अधिवेशन दो सदस्यों तक की उपस्थिति में हो सकेगा। पत्र द्वारा आई हुई अन्य सदस्यों की सम्मतियाँ भी ग्राह्य होंगी।

(५) यदि किसी रचना के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति की इच्छा हो कि उस पर पुरस्कार के लिए विचार किया जाय, तो उसका कर्त्तव्य होगा कि उसकी सात प्रतियाँ सम्मेलन कार्यालय में पुरस्कार-समिति द्वारा निश्चित तिथि से पहले भेज दें। ये सब पुस्तकें सम्मेलन की सम्पत्ति होंगी।

नोट—उपर्युक्त नियम के लिए संवत् १९९५ के पुरस्कार के निमित्त ३१ जनवरी १९३९ अन्तिम तिथि नियत की गई है। भविष्य के लिए पुस्तकें पहुँचने की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त रक्खी गई है।

(६) पुरस्कार के लिए केवल जीवित लेखकों की रचनाओं पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार किया जायगा। किन्तु यदि किसी लेखक की पुस्तक सूची में आ जाने के पश्चात् उसका देहावसान हो जाय तो भी उसकी रचना पर विचार किया जायगा और यदि पुरस्कार प्रदान करनेका समिति निश्चय करे, तो उक्त लेखक के उत्तराधिकारी को दिया जावेगा।

(७) प्रथम पुरस्कार के लिए निश्चित तिथि से पूर्व की प्रकाशित सभी पुस्तकों पर विचार हो सकेगा पर भविष्य में निश्चित तिथि से १५ महीना से अधिक पहले की प्रकाशित रचनाओं पर विचार न किया जायगा। प्रत्येक रचना के लिए केवल एक बार भेजी जा सकेगी।

(८) पुरस्कार-निर्णय के लिए पांच निर्णायक पुरस्कार-समिति नियुक्त करेगी।

(९) पुरस्कार-समिति का कोई सदस्य निर्णायक नहीं हो सकेगा।

(१०) पुरस्कार-समिति तथा निर्णायकों में कोई भी ऐसा लेखक या प्रकाशक न रह सकेगा जिसकी लिखित या प्रकाशित रचना पुरस्कार के लिए विचारार्थ आई हो।

(११) जो पुस्तकें विचारार्थ कार्यालय में आवेंगी, उनकी पहुँच प्रेषक के पास भेजी जायगी।

(१२) पुरस्कार समिति को अधिकार होगा कि वह निश्चित तिथि तक आई हुई पुस्तकों के अतिरिक्त अपनी ओर से भी पुस्तकें निर्णय के लिए निर्णायकों के सामने रख सके।

(१३) पुरस्कार-समिति को यह अधिकार होगा कि आई हुई पुस्तकों में से किसी पुस्तक को अयोग्य ठहरा कर निर्णायकों के पास न भेजे।

(१४) पुरस्कार-समिति को अधिकार होगा कि रचनाओं के आ जाने पर यदि वह देखे कि कोई भी रचना पुरस्कार के योग्य नहीं है तो उस वर्ष पुरस्कार न दे। इसी प्रकार यह भी अधिकार होगा कि यदि किसी वर्ष पुरस्कार न दिए जाने के कारण बचत हो तो किसी वर्ष वह दो पुरस्कार दे। पुरस्कार किसी वर्ष न दिया जाय, इस प्रकार का निर्णय तभी हो सकेगा जब पुरस्कार समिति के कम से कम चार सदस्य उसके पक्ष में होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१५) प्रत्येक वर्ष पुरस्कार-समिति पांच अलग-अलग सूचियाँ कार्यालय में बनवायेगी। १—उपर्युक्त नियम (५) के अनुसार आई हुई रचनाओं की सूची २—नियम (५) का उल्लंघन कर आई हुई रचनाओं की सूची ३—नियम १३ के अनुसार अयोग्य ठहराई गई रचनाओं की सूची ४—उन रचनाओं की सूची जिन्हें नियम (१२) के अनुसार पुरस्कार-समिति ने अपनी ओर से निर्णायकों के सामने भेजने का निश्चय किया है ५—उन रचनाओं की सूची जिन पर निर्णायकों को विचार करना है।

इन सब सूचियों में पृथक् क्रम संख्या, रचना का नाम और रचयिता का नाम होगा। इनके अतिरिक्त उपर्युक्त सूची (१) (२) और (३) में कार्यालय में पहुँच की तिथि तथा प्रेषक का नाम और पता होगा। सूची (३) और (४) में उपर्युक्त व्योरों के अतिरिक्त पुरस्कार समिति के निर्णय की तिथि दर्ज होगी।

(१६) उपर्युक्त पांचवीं सूची तैयार हो जाने पर उसकी एक-एक प्रति प्रत्येक निर्णायक के पास भेजी जायगी और सुविधानुसार निर्णायकों को रचनाएँ भेजने का प्रबन्ध किया जायगा।

(१७) पुस्तकों पर विचार करके प्रत्येक निर्णायक अपनी सम्मति के अनुसार उनमें से एक सर्वोत्तम रचना चुन लेगा और पुरस्कार समिति को अपनी सम्मति की सूचना देगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक निर्णायक उन रचनाओं के नाम भी लिखेगा जो उसकी सम्मति के अनुसार उत्तमता में द्वितीय और तृतीय हों। निर्णायक इन तीनों रचनाओं पर आलोचनात्मक और तुलनात्मक सम्मति देगा।

(१८) सर्वोत्तम होने के सम्बन्ध में सब से अधिक निर्णायकों की सम्मतियाँ जिस रचना के पक्ष में होंगी उसके रचयिता पुरस्कार के अधिकारी होंगे। यदि निर्णायकों की उन सम्मतियों से, जो रचनाओं के सर्वोत्तम होने के पक्ष में हैं, यह निर्णय न हो सके कि मताधिक्य किस एक रचना के पक्ष में है, तो उत्तमता में द्वितीय और तृतीय स्थानों के लिए आई हुई सम्मतियों से भी सर्वोत्तम रचना का निर्णय किया जा सकेगा। जैसे पांच निर्णायकों में दो ने एक रचना को सर्वो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्तम बताया और दो ने एक दूसरी रचना को और पांचवें ने सर्वोत्तम एक अन्य रचना को बताया तब उन पुस्तकों में जिन्हें दो-दो प्रथम स्थान मिले हैं जिस पुस्तक को अधिक द्वितीय स्थान मिले हैं उसके लिये मताधिक्य समझा जायगा। इसी प्रकार आवश्यकता पड़ने पर तृतीय स्थान सम्बन्धी सम्मति तक से मताधिक्य का निर्णय हो सकेगा।

(१९) मताधिक्य का पता लगते हुये भी किसी रचना के सर्वोत्तम होने के पक्ष में तीन निर्णायकों से कम की सम्मति हो तो पुरस्कार समिति को अधिकार होगा कि पुरस्कार दे वा न दे।

(२०) यदि पुरस्कार समिति को उचित जान पड़े तो वह निर्णायकों की सम्मति प्रकाशित कर सकेगी।

११ —प्रधान मन्त्री ने सम्मेलन कार्य्यालय के लेखकों तथा कर्मचारियों की वार्षिक वेतन वृद्धि का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि इस समिति के निश्चय ४ के अनुसार बनाई गई उपसमिति इस सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट आगामी कार्य्य समिति में उपस्थित करे। गनेशदीन तथा हरीलाल चपरासी को ।।) मासिक पौष सौर १ सं० १९९५ से वेतन वृद्धि देना स्वीकार हुआ।

१२—प्रचार विभाग के प्रारम्भिक कार्य्य के लिये १००) परीक्षा विभाग से देना निश्चय हुआ।

१३—श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद् के १०००) एक हजार रुपये का पुस्तक प्रकाशन के लिये दान उनके पत्र $\frac{८११ व}{२२-१०-३८}$ का उत्तर देते हुए सधन्यवाद स्वीकार किया जाना निश्चय हुआ।

१४—साहित्य सदन अबोहर (पंजाब) को २५०) सहायतार्थ भेजने की स्वीकृति दी गई।

१५—नवीन नियमावली के नियम १८ (च) तथा (छ) के अनुसार हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद के लिये व्यवस्थापकों तथा परीक्षाओं के दस-दस प्रतिनिधि निर्वाचित हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६—नवीन नियमावली के नियम १८ (घ) के अनुसार कार्य्य-समिति ने पुरानी नियमावली के नियम १५ (छ) की १७ शिक्षा संस्थाओं के प्रतिनिधियों को हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद के लिये सिफ़ारिश की। तत्पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

बाबूराम सक्सेना
एम० ए०, डी०,-लिट्०,
प्रधान मन्त्री

साहित्य समिति का प्रथम अधिवेशन

साहित्य समिति का प्रथम अधिवेशन रविवार ता० ६—११—३८ को दिन के १२ बजे से हिन्दी संग्रहालय भवन में हुआ। जिसमें ८ सदस्य उपस्थित थे।

१—साहित्य मन्त्री जी ने 'भारतवर्ष का इतिहास' भाग १ के पुनः प्रकाशन का विचार उपस्थित किया। अधिक समय तक विचार हो कर बहुमत से निश्चय हुआ कि इसकी १००० प्रतियाँ छपाई जायँ।

२—सम्मेलन पत्रिका की आर्थिक स्थिति पर विचार हो कर निश्चय हुआ कि १००) सुलभ साहित्य माला की आय से लिया जाय। पत्रिका साधारणतः ३२ पेज डिमाई की निकाली जाय। जिसमें लगभग १६ पृष्ठ लेख के, ८ पृष्ठ हिन्दी-संसार के तथा ८ पृष्ठ कार्य्यालय सम्बन्धी सूचनादि रहें।

३—श्री बदरीनारायण जी चौधरी प्रेमधन के संग्रह के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि 'पीयूष वर्षा' का नाम 'प्रेमधन सर्वस्व' रक्खा जाय और इसकी ५०० प्रतियां छपाई जायँ।

४—हिन्दुस्तानी नवीन प्राइमर छपाने के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि सम्मेलन द्वारा लिपि का स्वरूप मान्य करा लेने पर सम्मेलन इस पुस्तक का प्रकाशन करा सकेगा इसके पूर्व असमर्थ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—साहित्य मन्त्री ने विद्योत्साही समिति, मनीपुर स्टेट का पत्र पढ़कर सुनाया। निश्चय हुआ कि सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें आधे मूल्य पर इन्हें दी जायँ और नियमावली भेजकर इनसे सम्बद्ध होने के लिये कहा जाय।

रामकुमार वर्मा, एम० ए०
साहित्य मन्त्री
हिन्दी-साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

प्रचार समिति का प्रथम अधिवेशन

प्रचार समिति का प्रथम अधिवेशन रविवार कार्तिक सौर २७ सम्वत् १९९५ तदनुसार ता० १३-११-३८ को सम्मेलन के संग्रहालय भवन में २ बजे दिन से हुआ जिसमें निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

(१) एक वैतनिक प्रचारक प्रचार करने के लिए अस्थायी रूप से रक्खा जाय जिसका वेतन अधिक से अधिक २५) मासिक हो। प्रचारक का काम होगा कि प्रत्येक ज़िले में सदस्य बनावे और शाखा सभाएँ स्थापित करें।

(२) अवैतनिक प्रचारक नियुक्त करने का विषय अभी स्थगित किया जाय।

(३) निम्नलिखित सज्जनों की एक उपसमिति बनाई जाय जो निश्चय करेगी कि प्रचारकों के क्या कर्तव्य हों:—

१ श्री बाबूराम सक्सेना
२ ,, दयाशंकर दुबे
३ ,, भगवानदास अवस्थी (प्रचार मन्त्री)

(४) प्रचारक वर्ग खोलने का निश्चय जब तक पर्याप्त रुपया न आ जावे स्थगित किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) अदालतों में देवनागरी लिपि और हिन्दी प्रचार करने की दृष्टि से आरायज़ नवीसी तथा मुनीमी का वर्ग सम्मेलन में खोला जाय। परीक्षा विभाग से इस प्रकार के वर्ग खोलने की सिफ़ारिश की जाय।

(६) जो आय साधारण सदस्यों के शुल्क से तथा प्रचारकों के प्रयत्नों से हो वह प्रचार विभाग की सम्पत्ति समझी जाय।

(७) अदालतों में नागरी प्रचार के लिये तथा भिन्न-भिन्न ज़िलों में नागरी प्रचार के प्रयत्न के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए दो उपसमितियाँ बनाई जायँ। तत्पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

भगवानदास अवस्थी
प्रचार मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

[समालोचनार्थ पुस्तक की दो प्रतियां भेजने की कृपा करें । संपादक]

ज्योतिर्मयी

दोहा काव्य की मुक्तक शैली का एक आधार है। इसमें कल्पना और कला-सौन्दर्य के लिए यथेष्ट स्थान रहता है। कुशल कलाकार बड़ी स्वाभाविकता से इसके सूक्ष्म कलेवर में एक अत्यन्त गंभीर और विस्तृत भाव का समावेश कर देता है।

हिन्दी साहित्य में दोहा अथवा 'दूहा' काव्य प्रणाली बहुत प्राचीन है। बिहारी, कबीर, तुलसी और रहीम आदि ने इसमें उत्कृष्ट सफलता का परिचय दिया है। नवीन युग में भी हमें वीर सतसई और दुलारे दोहावली आदि उत्तम रचनाएँ प्राप्त हुई हैं। वर्त्तमान काव्य-प्रवृत्ति को देखते हुए तो हमें उनके विषय में अवश्य कौतूहल होता है किन्तु हम उनकी गुरुता और महत्त्व की सहसा उपेक्षा नहीं कर सकते। इसी क्रम में श्री अनिरुद्ध जी ने अपनी ज्योतिर्मयी के रूप में एक दोहों का संग्रह हिन्दी संसार के सामने रक्खा है।

ज्योतिर्मयी के कुछ दोहे उत्तम और भावपूर्ण हैं। उनमें कला का स्वाभाविक विकास दृष्टिगोचर होता है 'कल्पना की समाहार शक्ति तथा भाषा की समास-शक्ति' में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं आने पाई। उदाहरणार्थः—

सारस-चरनांकित निरखि 'तीर' सरस-सरि-तीर।
विधुर सारसी के नयन बरसन लागे नीर॥

पियन अमिय आवें किते, यहै जान जिय नैन।
दिन प्रतिदिन बाढ़न लगें कबहुँ कि तृसित फिरै न॥

कला कमच्छा पटु-भली-लली अली! रसलीन।
गली गली मो मन मृगा, बाँधि चली बिछली न॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि दोहे उच्च कोटि में रखने योग्य हैं। इसमें सौन्दर्य और मौलिकता को प्रश्रय मिला है।

ज्योतिर्मयी में हमें अनेक स्थल पर रीति काल का आभास मिलता है अनिरुद्ध जी ने बहुत स्थानों पर नायिका और नायक के चित्र उपस्थित किए हैं। कहीं कहीं पर पूर्ववर्त्ती कवियोंके भावों का अपहरण भी हुआ है। रस और अलंकारों की योजना का अनेक स्थानों पर प्रत्यक्ष प्रयास दीख पड़ता है।

ज्योतिर्मयी की भाषा ब्रज है किन्तु हमें उसका पुष्ट और परिमार्जित स्वरूप नहीं मिलता। कहीं कहीं पर संस्कृत की समासपूर्ण पदावली का और कहीं विशुद्ध खड़ी बोली के प्रयोगों का आश्रय ग्रहण किया गया है। साथ ही हमें अनेक स्थानों पर भाव-शैथिल्य के भी दर्शन होते हैं:—

अजौं ताहि रससिद्ध रे फूँकि रह्यो तू हाय!
तस हिय-रस तजि विरह-क्रूर आनन झलक्यो जाय॥
रिम झिम रिम झिम झरि परौ जल मुतियन के हार।
निरविकार संसार हे नभ परियन के प्यार॥

उपर्युक्त दोहों में 'हाय,' 'निरविकार संसार' तथा 'हे' आदि प्रयोगों ने अनर्थ कर दिया है, दोहा एक छोटा-सा छन्द है इतने पर भी कवि के भाव इतने छोटे हैं कि उसकी समुचित पूर्ति नहीं होती।

ज्योतिर्मयी की तृतीय किरण में हमें प्रकृति-दर्शन का अच्छा परिचय मिलता है। उसमें अनेक स्थलों पर कवि ने सूक्ष्म निरीक्षण तथा भावुकता का अच्छा प्रदर्शन किया है।

ज्योतिर्मयी साधारणतया एक अच्छी रचना है। हमें लेखक से भविष्य में बहुत कुछ आशा है। विश्वनाथ कुलश्रेष्ठ

संगीताञ्जलि—लेखक—श्री ओंकारनाथ गौरीशंकर ठाकुर, प्रकाशक-श्री संगीत निकेतन खेतवाड़ी मेनरोड, बम्बई ४। पृष्ठसंख्या १०७ मूल्य १।)

श्री विष्णु दिगंबर ने संगीत क्षेत्र में जो क्रान्ति उपस्थित की थी उसने आधुनिक संगीत शास्त्रियों का मार्ग अत्यन्त परिष्कृत और प्रशस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया था। श्री ओंकारनाथ जी ने उसी क्रान्ति में योग दे कर जो अनुभवजन्य ज्ञान प्राप्त किया है, उसी का स्पष्टीकरण इस ग्रन्थ में किया गया है। जहां अन्य संगीत शास्त्रियों ने बिलावल अथवा कल्याण से संगीत शिक्षा का प्रारम्भ माना है, वहाँ ओंकारनाथ जी ने भूपाली से ही श्रीगणेश किया है। वे स्वर साधना के विचार से भूपाली और हंसध्वनि को ही प्रथम स्थान देते हैं, जो स्वरों के आरोह और अवरोह को दृष्टि में रखते हुए समुचित जान पड़ता है। इस ग्रन्थ में भूपाली, हंसध्वनि, दुर्गा, सारंग, तिलंग, भिन्नषड्ज, खमाच, देश और काफ़ी राग त्रिताल, झपताल और चारताल से गानों द्वारा स्पष्ट किये गए हैं। प्रत्येक राग का परिचय भी दिया गया है। इस प्रकार ग्रन्थ संगीत के विद्यार्थियों को लाभदायक सिद्ध होगा इसमें सन्देह नहीं। ओंकारनाथ जी अनुभवी संगीत शास्त्री हैं अतः उनका स्पष्टीकरण सभी ज्ञातव्य बातों को लिए हुए है। ग्रन्थ उपादेय है। लेकिन इस ग्रन्थ की भाषा अत्यन्त अशुद्ध है। गीतों का चुनाव भी कहीं कहीं सुरुचि का घातक है। जहां शास्त्रीय ज्ञान का सरल और स्पष्ट निरूपण है वहां इसकी भाषा और व्याकरण एवं गीतों के चुनाव में भी शुद्धता का ध्यान रखना आवश्यक है। आशा है, दूसरे संस्करण में यह त्रुटि दूर कर दी जावेगी।

मुद्रण प्रवेश—मूल लेखक श्री शंकर रामचन्द्र दाते बी० ए० अनुवादक श्री गोपी वल्लभ उपाध्याय। प्रकाशक शंकर रामचन्द्र दाते, लोक संग्रह छापाखाना ६२४ सदाशिव पेठ, पूना २। पृष्ठ संख्या २३१ मूल्य २)

श्री दाते का यह ग्रन्थ प्रेस के प्रारम्भिक कार्यों के विवरणों से संपूर्ण है। टाइप के अनेक प्रकारों का पूर्ण परिचय इसमें पाया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक के सहारे कंपोजिंग का काम सीख कर स्वतंत्र व्यवसाय में प्रवृत्त हो सकता है इसमें सन्देह नहीं। टाइप, केस की रचना, प्रेस कापी, छापने की पद्धति, फ़ार्म खींचना, उतारना आदि अनेक कार्यों का साधारण ज्ञान इस ग्रन्थ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा सरलता से जाना जा सकता है। बेकारी के युग में यह पुस्तक प्रेस व्यवसायिकों को लाभप्रद होगी। भाषा शुद्ध और सरल है। प्रत्येक प्रेस में इस पुस्तक का रहना अनेक कार्यों में सहायक सिद्ध होगा।

राजपूतनियाँ—लेखक—श्री जगदीश प्रसाद माथुर 'दीपक', प्रकाशक—वर्तमान साहित्य मण्डल, बाजार सीताराम, दिल्ली। पृष्ठ १३६ मूल्य १)

राजस्थान के नारी इतिहास की खोज में दीपक जी ने अपनी मौलिकता प्रदर्शित की है। उसी नारी इतिहास के आधार पर दीपक जी ने दस 'मर्मवेधी' आदर्शपूर्ण अनुपम गाथाओं की सृष्टि की है। प्रत्येक गाथा कहानी रूप में है। शैली मनोरंजक और सजीव है। ऐतिहासिक सत्य के साथ कहानीकार ने अपनी कल्पना का सहयोग अपेक्षित मात्रा ही में किया है। पुस्तक मनोरंजक और उत्तेजनापूर्ण है।

—सुकुमार

साहित्य-सन्देश—सम्पादक-गुलाबराय एम० ए० और महेन्द्र। अंक ४ भाग २, दिसम्बर १९३८। साहित्य प्रेस, सिविल लाइन्स, आगरा से मुद्रित और प्रकाशित। वार्षिक मूल्य २)

इस पत्रिका में सुन्दर साहित्यिक लेखों का संग्रह है। प्रस्तुत अंक में "पन्त जी का नया रूप" और 'लली' जी की काव्य-साधना आदि अच्छे लेख हैं। शैली और भाषा अत्यन्त सरल होते हुए भी रोचक तथा प्रवाहयुक्त है। लेखकों ने बड़ी ही सूक्ष्म दृष्टि से इनकी कविताओं का अध्ययन किया है, और उनके गूढ़ भावों की तह तक पहुँच, कवियों की मानसिक विचार-धारा पर प्रकाश डाला है। "निशा-निमंत्रण" अथवा "लली जी की काव्य-साधना" की तरह यदि "पन्त जी का नया रूप" के लेखक श्री गोबिन्द वल्लभ जी त्रिपाठी पन्त जी की कविताओं पर उदाहरण सहित कुछ और प्रकाश डाल कर उन्हें कविता की कसौटी पर कसते, तो उनका लेख अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्व का हो जाता। सरल, सुबोध तथा परिमार्जित भाषा का प्रयोग ही 'साहित्य-सन्देश" की विशेषता है। ऐसे सुन्दर लेखों को पत्रिका में प्रकाशित करना उज्ज्वल भविष्य को सूचित करता है। ऐसे ही पत्र साहित्य में विशेष स्थान के अधिकारी तथा पाठकों के लिए विशेष लाभदायक हैं।

—सुशील कुमारी

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय दृष्टिकोण

१. निधन

श्री रामचरित उपाध्याय जी

हिन्दी साहित्य के लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि गत १२ नवंबर को ग़ाज़ीपुर में खड़ी बोली के पुराने कवि श्री रामचरित उपाध्याय की मृत्यु हो गई। उपाध्याय जी ने द्विवेदी काल में हिन्दी कविता का भाण्डार सफलता के साथ अलंकृत किया था। उन्होंने रामचरित चिन्तामणि लिखकर राम साहित्य को भी अलंकृत किया था। 'सरस्वती' के तो उपाध्याय जी मान्य कवि थे। उनकी मृत्यु से हिन्दी की क्षति हुई है, इसमें सन्देह नहीं। हम ईश्वर से उपाध्याय जी की दिवङ्गत आत्मा के लिए शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

श्री महात्मा हंसराज साहित्य वाचस्पति

जिन महात्मा हंसराज को साहित्य सम्मेलन ने अपने पिछले अधिवेशन में साहित्य वाचस्पति की उपाधि देकर अपने को गौरवान्वित किया था उन्हीं हंसराज जी का गत १५ नवंबर को लाहौर में देहावसान हो गया। हंसराज जी ने पञ्जाब में हिन्दी के प्रचार के लिए जो परिश्रम किया था, वह अभूतपूर्व है। उन्होंने डी० ए० वी० कालेज की स्थापना कर उसका संचालन भी बड़ी योग्यता से किया था। साहित्य सम्मेलन के तो वे श्रद्धेय ही थे। उनकी स्मृति में हम अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित कर उनकी आत्मा के लिए शान्तिकामना करते हैं।

२. हिन्दी और रेडियो

रेडियो द्वारा हिन्दी की जो हत्या हो रही है, उससे समस्त शिक्षित समुदाय परिचित है। रेडियो की हिन्दी हिन्दुस्तानी भी नहीं कही जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती। वह विशुद्ध अरबी, फ़ारसी शब्दों से भरी हुई उर्दू है। इस बीच में रेडियो की भाषा के संबन्ध में अनेक प्रकार से विचार विनिमय हुआ किन्तु उसका परिणाम कुछ भी नज़र नहीं आ रहा है। इसके लिए अब आवश्यक यही है कि जो सज्जन रेडियो पर 'टाक' दें वे अपनी भाषा को यथा संभव हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही बनाने की कृपा करें। जब तक हमारे वाचक और वक्ता अपने भाषणों में भाषा के स्वरूप की रक्षा न करेंगे तब तक समाचार पत्र के लेखों और वक्तव्यों से कुछ भी न होगा। अभी गत ८ दिसंबर को डा० धीरेन्द्र वर्मा ने लखनऊ ब्राडकास्टिंग स्टेशन से 'केशव-दास' पर एक छोटा सा भाषण दिया था। डाक्टर साहब ने अपने भाषण में भाषा के स्वरूप को यथा संभव विकृत होने से बचाया है। हिन्दी अधिक से अधिक कहां तक हिन्दुस्तानी हो सकती है, इसका उदाहरण उक्त वक्तव्य में मिल सकेगा। हम आगामी संख्या में डाक्टर वर्मा का वह भाषण प्रकाशित कर रहे हैं।

३. क्षमा याचना

शिमला सम्मेलन के बाद अन्य आवश्यक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण सम्मेलन पत्रिका शीघ्र ही प्रकाशित न की जा सकी। ग्राहक-गण हमारी विवशता के लिए क्षमा करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन के इस वर्ष के पदाधिकारी

१. सभापति—श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर, 'आज' कार्यालय, काशी।
२. उप सभापति—श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, स्पीकर भवन, लखनऊ।
३. " " बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सदाक़त आश्रम, दीघाघाट, पटना।
४. प्रधान मन्त्री—श्री डा० बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्०, बैंकरोड, प्रयाग।
५. प्रबन्ध मन्त्री—श्री प्रो० रामलखन शुक्ल एम० ए० बैरहना, प्रयाग।
६. संग्रह मन्त्री— " जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, आयुर्वेदपंचानन, क्रास्थवेटरोड, प्रयाग।
७. परीक्षा मन्त्री—श्री दयाशङ्कर दुबे एम० ए०, एल-एल० बी०, दारागंज, प्रयाग।
८. अर्थ मन्त्री—श्री निरंजनलाल भार्गव, गोविन्द भवन, प्रयाग।
९. साहित्य मन्त्री—श्री रामकुमार वर्मा, एम० ए०, प्रयाग स्ट्रीट, प्रयाग।
१०. आय-व्यय निरीक्षक—श्री राधाकृष्ण तिवारी, दारागंज, प्रयाग।
११. प्रचार मन्त्री—श्री भगवानदास अवस्थी, दारागंज, प्रयाग।
१२. राष्ट्रभाषा प्रचार मन्त्री—श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, हिन्दी प्रचार समिति, वर्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

संख्या ६, ७] माघ, फाल्गुन सम्वत् १९९५ [भाग २६

हिन्दी में पारिभाषिक शब्द

श्री गुलाबराय एम० ए०

हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य क्रमशः बढ़ता जा रहा है किन्तु इस संबन्ध में सब से बड़ी ख़राबी इस बात की है कि पारिभाषिक शब्दों को निश्चित रूप नहीं दिया गया है। सब लोग अपनी-अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाते हैं। इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि मिश्रित शब्दों के अभाव में प्रत्येक लेखक अपने सहयोगी से अच्छा शब्द देना चाहता है। दूसरी बात यह कि हर एक आदमी अपने को बड़ा समझता है और शब्द-निर्माता का श्रेय लेना चाहता है। इसका फल होता है जितनी किताबें उतने पारिभाषिक शब्द। आक्सीजन को कोई ओषजन कोई प्राणवायु और कोई प्रोअक्सीजन ही लिखता है। नाईट्रोजन को कोई नोषजन लिखते हैं और कोई नत्रजन। इस वैभिद्य के कारण विद्यार्थियों की मुश्किल होती है। 'दो मुल्लों में मुर्ग़ी हराम' की लोकोक्ति सार्थक हो जाती है और हिन्दी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रश्न उतना ही दूर हो जाता है।

चाहिए तो यह कि भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा में एक ही से पारिभाषिक शब्द हों और वे चाहे उर्दू लिपि में लिखे जायँ चाहे नागरी लिपि में। यह बात स्वप्न मात्र तो नहीं है किन्तु इस स्वप्न के चरितार्थ करने में कई कठिनाइयाँ हैं। यह स्वप्न शायद तब चरितार्थ हो सके जब रसायनशास्त्र और भौतिक विज्ञान के सिद्धान्तों का इतना प्रचार हो जाय कि वे साधारण बोलचाल के विषय बन जायँ और तब जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार राज-मज़दूर वास्तु कला के शब्दों को हिन्दू मुसलमान के भेद भाव के बिना व्यवहार करते हैं वैसे ही भौतिक विज्ञान और रसायन शास्त्र के शब्दों का व्यवहार होने लगे। यह बात व्यावहारिक बातों के संबन्ध में ही चरितार्थ हो सकती है। ऊँचे सिद्धान्तों के लिए शायद संस्कृत या अरबी के शब्दों का ही प्रयोग करना पड़ेगा। कालान्तर में शायद उनका भी एकीकरण हो जाय। इस संबन्ध में मैं निराशावादी नहीं।

इस आदर्श से कुछ नीचा परन्तु अधिक व्यावहारिक आदर्श यह है कि कम से कम संस्कृत से संबन्ध रखने वाली भाषाओं के पारिभाषिक शब्द एक हों। इसके लिए प्रान्तीय सहयोग की आवश्यकता है। जब हिन्दी में ही पारिभाषिक शब्दों में एक रूपता नहीं है तब यह आदर्श भी कुछ दूर का है किन्तु पहले आदर्श को लक्ष्य में रखते हुए इस आदर्श को चरितार्थ करना राष्ट्र-भाषा के प्रत्येक शुभ-चिन्तक का परम कर्तव्य है।

हर्ष की बात है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने नागरी प्रचारिणी सभा के सहयोग से पारिभाषिक कोष निकालने का संकल्प किया है। इस कार्य को श्री सीताराम जी ने हाथ में लिया है। वे मालवीय अभिनन्दन ग्रन्थ निकाल कर अपनी संयोजन शक्ति का परिचय भी दे चुके हैं। उन्होंने इस संबन्ध में अपनी आयोजना भी तैयार की होगी। इस विषय में मेरे जो बिचार हैं उनको मैं प्रकट कर देना चाहता हूँ।

पारिभाषिक शब्दों के संबन्ध में प्रान्तीय सहकारिता के लिए अपील हिन्दी, उर्दू, बङ्गाली, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं में लिखा कर उन भाषाओं के प्रमुख पत्रों में निकाली जाय। उसमें इस बात पर ज़ोर दिया जाय कि वैज्ञानिक और दार्शनिक विषयों के लेखक अपनी अपनी किताबों से पारिभाषिक शब्दों को छाँट कर संयोजक के पास भेजें। इसकी जो कमिटी रहे उसमें एक बङ्गाली, एक गुजराती, एक महाराष्ट्र, एक सिंधी सज्जन रहें। एक या दो सज्जन दक्षिणी भाषाओं के भी प्रतिनिधि रहें। यदि हो सके तो उन भाषाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की साहित्य परिषदों से प्रतिनिधि माँगे जायँ। मैंने स्वयं अपने तर्क-शास्त्र के शब्दों को एकत्र कर लिया है। भाषा विज्ञान के शब्दों का संग्रह आचार्य श्यामसुन्दरदास के भाषा रहस्य तथा डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा के भाषा के इतिहास में दिए हुए हैं। इसी प्रकार मनोविज्ञान की भी शब्दावली एक या दो पुस्तकों में दी हुई है। अन्य भाषाओं में भी ऐसा होगा। उर्दू के पारिभाषिक शब्दों की भी अवहेलना न की जाय। व्यवसायियों में जिन शब्दों का व्यवहार होता हो उनका भी संग्रह किया जाय।

विज्ञान परिषद के विज्ञान की फाइलों से भी दो एक जानकार आदमी लगाकर शब्द छँटवा लेना चाहिये।

इसके पश्चात् अंग्रेज़ी भाषा में लिखे हुए विज्ञान और दर्शन के कोषों को मँगा कर उनकी शब्दावली से यह देख लेना आवश्यक होगा कि हिन्दी की शब्दावली में कोई कमी तो नहीं रह गई? मैंने अभी पञ्जाब पबलिक लाइब्रेरी की नई लिस्ट में Dictionary of scientific terms as used in various Sciences by C. M Beadnell का उल्लेख देखा है। शायद वह अच्छी हो। दार्शनिक शब्दों की भी डिक्शनरियां हैं।

प्रत्येक अंग्रेज़ी शब्द के संभावित हिन्दी पारिभाषिक शब्द लिखे जायँ और उन पर विचार किया जाय। जिन शब्दों के संबन्ध में सन्देह हो उनकी सूची निकाल कर विद्वानों का मत माँगा जाय। शब्द निर्माण के सिद्धान्त पहले से निश्चय कर लिए जायँ। उनमें निम्नोल्लिखित बातों का ध्यान रक्खा जाय :—

१—जहाँ तक हो शब्द नये न बनाये जायँ।

२—प्राचीन शब्दों को काम में लाया जाय।

३—अंग्रेज़ी के शब्द लिये जायँ तो उनको देशी रूप दिया जाय।

४—शब्दों को वाक्यों में भी व्यवहार करके देख लिया जाय।

५—अंग्रेज़ी शब्दों का शब्दार्थ देखा जाय। उस शब्दार्थ के अनुकूल शब्द गढ़े जायँ किन्तु जहाँ पर देखा जाय कि जिस विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर शब्द बना है वह अब ठीक नहीं है तो ठीक विचार का शब्द रक्खा जाय।

इस प्रकार यह कार्य कष्टसाध्य अवश्य है किन्तु सहयोग और परिश्रम से सुसाध्य हो जायगा। ऐसा कोष बन जाने से सभी भारतीय भाषाओं का उपकार होगा और देश का गौरव बढ़ेगा।

कार्य को सुलभ बनाने के लिए भिन्न भिन्न विज्ञानों की उपसमितियाँ बना ली जायँ। भौतिक विज्ञान और रसायन शास्त्र की एक उपसमिति हो। प्राणि शास्त्र (Zoology) वनस्पति शास्त्र (Botany) तथा चिकित्सा शास्त्र की एक पृथक उपसमिति हो। एक गणित और ज्योतिष की उपसमिति हो। क़ानून यद्यपि विज्ञान नहीं तथापि एक क़ानून के कोष की भी आवश्यकता है। आजकल नई नई कंपनियों के प्रोस्पेक्टस निकलते हैं उनके लिए कंपनी संबन्धी क़ानून के शब्द गढ़ना मुश्किल हो जाता है। इस पर भी विचार हो।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी और उर्दू की समस्या

श्रीमती सरोजनी नायडू

सभापति, मंत्री महोदय, बहनो और भाइयो !

एक महीने पहले इलाहाबाद स्टेशन पर बैठ कर मैं बनारस की गाड़ी का इन्तज़ार कर रही थी। गाड़ी एक घंटा लेट थी। इतने में किसी ने लाकर तार दिया, देखा, नीचे 'गाँधी' लिखा था। पूछा गया था, "क्या आप हिन्दी-प्रचार सभा के पदवीदान-उत्सव के अवसर पर भाषण दे सकती हैं ?" बापूजी ने गत २० वर्षों से हमें हुक्म की तामील करना सिखाया है। मैं 'न' कैसे कहूँ, मगर मैं तभी से सोच में पड़ गई कि जवाब क्या दूँ ? मैंने तो एक दिन भी हिन्दी नहीं सीखी मगर मुझे हिम्मत मिली—अपने भाई (पट्टाभि सीतारमय्या) को देखकर जो मुझसे कम हिन्दी जानते हैं; मगर उर्दू का कोष जेब में लिए फिरते हैं। तब मैंने उनसे मशविरा किया और निश्चय किया कि आज मैं उस ज़बान में बोलूँगी; जिसमें कबीर, तुलसी और मीरा ने गाया है।

क़ौमी ज़बान

यह बात मैं कई बार दोहरा चुकी हूँ कि हिन्दुस्तान की एकता और आज़ादी के लिए एक ज़बान की सख्त ज़रूरत है। एक ज़माना था जब यूरोप में तालीम की कमी थी; जब वहाँ कोई भी ज़बान नहीं थी। उस वक्त उन्होंने एक आम भाषा बनाई और उसके ज़रिये इंगलैंड और रूस; स्वीटज़रलैंड और स्पेन को मिलाया; उस समय यूरोप की किसी क़ौम ने इसके विरोध में कोई सत्याग्रह नहीं किया क्योंकि उस समय उन्हें समस्त यूरोप की एक सभ्यता बनानी थी। यूरोप को तरक्क़ी की नदी में बहाना था। उस समय किसी ने नहीं कहा कि फ्रेंच को हम आम भाषा नहीं मानेंगे; इससे हमारी ज़बान को नुक़सान होगा। संगीतमयी भाषा वाले इटली के किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वान ने यह आवाज़ नहीं उठाई कि इससे हमारी ज़बान मर जायगी ! बल्कि उन्होंने समझा कि यह एक काम चलाने की ज़बान है। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय कामों की भाषा है। फिर आज अगर इतनी मुख्तलिफ़ ज़बानों के रहते हुए हिन्दुस्तान में एक क़ौमी ज़बान फैलाई जा रही है, तो क्या यह कोई गुनाह है ? सेगांव के संत ने इसका प्रचार करने के लिए कहा, तो कौनसा गुनाह किया ? अगर कांग्रेस या महात्मा गांधी तेलगू तामिल वग़ैरह मादरी ज़बानों को मिटा कर क़ौमी ज़बान बनाने की बात कहते, तो मैं विरोध ज़रूर करती। सिद्धान्त और वसूल पर मैं हज़ार महात्मा गांधी से भी लड़ने को तैयार हूँ, गोकि मैं बहुत नाचीज़ हूँ।

गङ्गा यमुना का संगम

ज़बान के मामले में उत्तर और दक्षिण, हिन्दू और मुसलमान, कोई हस्ती नहीं रखते। उत्तर के लोगों में बहुत से ऐसे मुसलमान मिलेंगे जो संस्कृत जानते हैं, कबीर, मीराबाई के गीत गाते हैं। ज्यों ज्यों हम साहस वग़ैरह में आगे बढ़ते जाते हैं, त्यों त्यों हमारी ज़बान भी फैलती और बढ़ती जाती है। अभी उर्दू सबसे कम-उम्र ज़बान है, मगर उसकी तरक़्क़ी ख़ूब हो रही है। यह उर्दू ज़बान क्या है ? मुसलमान जब हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने आये—तो इसको जीत लिया, मगर यहाँ की ज़बान के बिना उनका काम कैसे चल सकता था। आख़िर उन्हें यहाँ के लोगों से समझौता करना पड़ा और उसी समझौते की ज़बान यह उर्दू है। इसमें तुर्की, फ़ारसी, पश्तो वग़ैरह के शब्द मिले हुए हैं। नये विचारों के लिए नए शब्दों की ज़रूरत पड़ती है और शब्द हम सब जगह से ले सकते हैं।

आज फ़ज़लुल हक़ साहब को ख़ौफ़ है कि बंगाल में उर्दू पर हमला किया जा रहा है, हिन्दुस्तानी के प्रचार से। मगर घर में बंगला बोलने वाले फ़ज़लुल हक़ साहब को मैं इत्मीनान दिला देना चाहती हूँ कि इससे उर्दू का कोई नुक़सान नहीं है। मैं उर्दू को बर्बाद नहीं होने दूँगी। उर्दू मुझे बड़ी प्यारी है। मेरे घर में उर्दू का मुशायरा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई जबान सीखने पर उस में बड़े-बड़े लफ्ज इस्तेमाल करने की ज्यादह ख्वाहिश रहती है। मगर रोजमर्रा के लिये तो हमें सरल भाषा चाहिए। भले ही साहित्य के लिये हम बड़े-बड़े लफ्जोंवाली भाषा सीख सकते हैं मगर हिन्दुस्तानी के प्रचार में हिन्दी-उर्दू जैसा कोई फ़र्क़ नहीं है। जैसे गंगा और यमुना के संगम के बाद दोनों नदियों का पानी अलग नहीं किया जा सकता, उसी तरह हिन्दुस्तानी से उर्दू और हिंदी अलग नहीं की जा सकती।

जातीय प्रश्न नहीं

हिंदी का विरोध तो राजनैतिक है—जो राजगोपालाचारी जी के सिर पर मारने के लिए एक हथियार का काम दे रहा है। जैसा कि पहले मैंने कहा है, जबान में कोई जातीय प्रश्न नहीं है। बङ्गाल के उलेमा अपने सब धार्मिक और मामूली काम बँगला में करते हैं। बंगाल के मजदूर, विद्यार्थी, फैशनेबुल महिलाएँ आजकल उन बँगला गीतों को गाती हैं, जो एक मुसलमान—नजरुल इस्लाम की क़लम से निकले हुए हैं। बंगाल के प्रसिद्ध एडीटर एकराम ख़ां बँगला में लिखते हैं। वे बँगला छोड़ कर उर्दू में लिखना पसन्द नहीं करेंगे, क्योंकि उन्हें अपने ख्यालात लाखों आदमियों तक पहुँचाना है। उसी तरह सीलोन के मुसलमान तामिल बोलते हैं। काश्मीरी ब्राह्मण तेज बहादुर सप्रू की जबान उर्दू है। इसलिये जबान किसी एक क़ौम की चीज नहीं है। जबान तो दिल की होती है। मैं चाहती हूँ कि दिल्ली के मैदान में आँध्र, तामिल और केरल के भाई जा कर अपने दिल के ख्यालात वहाँ के लोगों को समझावें। जबान दिल की चाभी है। अगर हमें एक से बोलना हो, तो अँग्रेजी से काम चल सकता है। लेकिन अगर आप लाखों और करोड़ों से बोलना चाहते हैं, तो अँग्रेजी से काम नहीं चलेगा। बिहार, यू० पी०, पंजाब और सिंध के किसानों से अगर मैं उनकी जबान में बोलूँ तो उन्हें मैं आजादी के जंग में खींच कर ला सकती हूँ, इसके लिए व्याकरण की जरूरत नहीं है। मैं व्याकरण नहीं जानती। यूरोप की तरह हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी एक क़ौमी ज़बान को अपनाना है। नक्शे में देखने पर पता चलता है कि हिन्दुस्तान के सब से ज़्यादा हिस्से में हिन्दी ही बोली जाती है। अगर हम साधारण बुद्धि से काम लें, तब भी हमें पता चलेगा कि हमारी क़ौमी ज़बान हिंदी हिंन्दुस्तानी ही हो सकती है। यहाँ हिन्दी-उर्दू का झगड़ा महज़ लफ़्ज़ों का है। हम लोग असलियत पर कभी नहीं झगड़ते, बल्कि लफ़्ज़ों पर ही मर मिटते हैं। काँग्रेस ने तय किया है कि हमारी लिपियाँ दो रह सकती हैं, मगर ज़बान एक है। मैं उर्दू पढ़ लेती हूँ। लेकिन देवनागरी लिपि पढ़ने में मुझे दिक्क़त होती है, क्योंकि मैं लड़कपन से ही हैदराबाद में रह रही हूँ। ये हिंदुस्तानी का विरोध करने वाले अपनी नाक कटा रहे हैं और भाई, तुम अपनी ज़बान लेकर अलग हो जाओगे, तो किसका बिगड़ेगा तरक्क़ी की नदी में नहीं बह पाओगे।

दिल के लिए पासपोर्ट

स्नातको! यह साल, यह डिग्री, यह प्रमाण-पत्र यह सब क्या है? क्या इन्हें फ्रेम लगा कर आलमारियों में बन्द कर रखना है? या उसकी बुनियाद पर देश का काम करना है? तुम्हारी चादर के कोने पर एक निशान है, जिस में तीन दिल मिल रहे हैं। उसी तरह हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ़ दिलों को मिलाने के लिए ही यह क़ौमी ज़बान है और आप के कन्धों पर उसकी जिम्मेदारी है। यह ज़बान सीखने के बाद भी आप में क़ौमियत का झगड़ा रह गया, तो यह ज़बान आपको मुबारक नहीं होगी। यह ज़बान ज़हर बन जायगी। हर क़ौम को अपनाइए, हर दिलों को मिलाइए तभी आपकी डिग्री मुबारक होगी। तभी यह ज़बान अमृत होगी।

मेरा विश्वास है, बस साल के अन्दर यहाँ पचासों लाख लोग हिंदुस्तानी सीख जायँगे। यह ज़बान तमाम हिन्दुस्तानवालों के दिल के लिए पासपोर्ट है। सेगाँव का बूढ़ा ऋषि, कितना दूरन्देश है। हम सामने की चीज़ नहीं देख सकते हैं, मगर वह सदियों आगे की देखता है। जब उसने कहा था खद्दर पहिनो, तो लोग हँसते थे और मैं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ोर से हँसती थी। हमारी समझ में खद्दर का अर्थशास्त्र नहीं घुसा था। लेकिन आज वही खद्दर हज़ारों बेवाओं की रोटी का ज़रिया है, रोते बच्चे को दूध और नङ्गों को कपड़ा देने वाला है। जब वह बुड्ढा ख़ुद हिन्दी नहीं जानता था जब वह दिल्लगी का मतलब 'ट्रैजिक' समझता था, तभी उसने हिन्दी सीखने का उपदेश दिया था। अब भी वह इस ज़बान का आलिम नहीं है। मगर वह ग़लती करके ही सीखता है क्योंकि उसे झूठा अभिमान नहीं है। हमें तो दिल के मतलब निकालने हैं, व्याकरण से हमारा क्या सरोकार! याद रखो—

एक बोली से एक ही दिल होगा,
एक दिल से एक ही कोशिश होगी,
एक कोशिश से एक ही क़िस्मत होगी
और यह क़िस्मत ही आज़ादी है।

[दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के आठवें पदवीदान महोत्सव के अवसर पर श्रीमती सरोजनी नायडू का दीक्षान्त भाषण।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी संसार

श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, संग्रह मन्त्री

आसाम में रोमन लिपि—आसाम सरकार ने अपने पहाड़ी ज़िलों में छठी क्लास तक हिन्दुस्तानी की शिक्षा देने का निश्चय किया है। यह अच्छी बात है किन्तु साथ ही हिन्दुस्तानी के प्रचार के लिये उसने रोमन लिपि का उपयोग करने की आज्ञा दी है। सारा देश देवनागरी लिपि का गुण-गान कर रहा है, वह भारतीय भाषाओंके लिये सहज, सुबोध और स्वाभाविक है। इतना होते हुए भी इस डरसे कि मुसलमान देवनागरीको ग्रहण नहीं करेंगे, रोमन का प्रचार करना अनुचित है। रोमनके पक्षमें अभी तक केवल सुभाष बाबू ही मालूम पड़ते हैं। हो सकता है कि उन्हीं की सम्मति से ऐसा हुआ हो। किन्तु सब प्रान्तों की सम्मति की परवाह न कर इस तरह आसाम को घातक छलांग मारनी उचित नहीं थी। भारतीयत्व के विरुद्ध एक विदेशी साथ ही अपूर्ण लिपि का प्रचार हमारे लिये कभी शुभ फलदायक नहीं होगा। क्या महात्मा जी और बाबा राघवदास जी इस संबन्ध में कुछ प्रयत्न करगे ?

आसाम में शिक्षक—आसाम प्रान्त की कांग्रेसी सरकार ने सभी हाई स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य कर दी है। हाई स्कूलों में हिन्दी पढ़ानेवाले शिक्षक तैयार करने का भार आसाम प्रान्तीय हिन्दी प्रचार समिति ने अपने ऊपर लिया है। इसके लिये गोहाटी में राष्ट्रभाषा प्रचारक शिक्षणालय खुल रहा है। १ फ़रवरी से अध्यापकों की शिक्षा का काम आरम्भ हो गया और मार्च महीने से हाईस्कूलों में पढ़ाई आरम्भ हो जायगी। विद्यालय के साथ एक पुस्तकालय भी खुला है। प्रकाशकों से प्रार्थना है कि अपनी पुस्तकें और समाचार-पत्र भेजने की कृपा करें। पता श्रीयुत जमुनाप्रसाद, संचालक, हिन्दी प्रचार समिति गोहाटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा—१० जनवरी को सूरत में श्रीयुत काका कालेलकर ने "राष्ट्रभाषा" पर व्याख्यान दिया। आपने कहा "हिन्दुस्थान की एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिये। वह अंग्रेजी नहीं, कोई स्वदेशी भाषा ही हो सकती है। और वह भाषा निर्विवाद रूप से हिन्दी ही हो सकती है। सेवा करने वालों को उचित है कि वे जिस प्रान्त में काम करने जायँ मिशनरियों की तरह उसी प्रान्त की भाषा में काम करें। प्रान्तों की भिन्न भिन्न भाषाएँ होते हुए भी हमारा देश सांस्कृतिक तथा राजनैतिक दृष्टि से एक है। अतः उसकी एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिये। पहले राष्ट्रभाषा संस्कृत थी, फिर संतों की भाषा हिन्दी बनी। पठान और मुग़लों ने फ़ारसी चलानी चाही; किन्तु यह अस्वाभाविक था, उन्हें भी जनता की भाषा स्वीकार करनी पड़ी, वही उर्दू कहलायी, यह विदेशी भाषा पर देशी भाषा की विजय है। अब गुजरात में भी हिन्दी का जोर से प्रचार करने का समय आ गया है। हिन्दी को सर्व प्रथम गति देने वाले महर्षि दयानन्द गुजराती थे, उसके बाद फिर गति दी एक गुजराती शेगांव के सन्त ने। यह देखते हुए गुजरातियों को हिन्दी के क्षेत्र में पिछड़ना न चाहिये।

प्रधान मन्त्री खेर के विचार—गुजरात में हिन्दी का प्रचार करने के लिये सूरत में एक हिन्दी प्रचारक मण्डल है, वह राष्ट्र भाषा के प्रचार के लिये बड़ा प्रयत्न कर रहा है। इस प्रचार मण्डल में १७ जनवरी को बम्बई के प्रधान मन्त्री खेर साहब ने भाषण दिया था। आपने कहा "राष्ट्र भाषा को उत्तेजना देना राष्ट्रीय सरकार का कर्तव्य है। हिन्दुस्तान के ऐक्य के लिये राष्ट्र-भाषा जरूरी है। यदि आप किसी दूसरे प्रान्त में जायँ तो राष्ट्र-भाषा द्वारा ही व्यवहार कर सकते हैं। आज देश में ९० प्रतिशत लोग अंग्रेज़ी नहीं समझ सकते। इस लिये अंग्रेज़ी तो राष्ट्र भाषा हो ही नहीं सकती। हिन्दी सीखना बहुत सरल है। पहले मुझे भी हिन्दी नहीं आती थी। इसलिये मैंने प्रथमा और मध्यमा का अभ्यास किया और परीक्षा में पहला आया। अपने साथ में अपने लड़के को भी हिन्दी सीखने ले जाता था। आज तो प्रत्येक राष्ट्र-प्रेमी को तथा प्रत्येक राष्ट्र सेवक को राष्ट्र भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीखने की जरूरत है। क्योंकि राष्ट्र का व्यवहार राष्ट्र भाषा द्वारा ही हो सकता है।

नेहरू जी के विचार—३१ जनवरी को शान्तिनिकेतन में पण्डित जवाहरलाल नेहरू के हाथों "हिन्दी भवन" खोलने का समारम्भ हुआ। आपने अपने भाषण में हिन्दी और उर्दू के झगड़े को खेदजनक बताया और कहा कि उर्दू और हिन्दी उन दो धाराओं के समान है जो एक ही मूल स्थान से निकली हैं। उनका ढाँचा और बनावट बिलकुल एक ही है। अगर हम लोग बीच की खाई को और गहरी बनाने की कोशिश न करें तो हम अपनी भाषा को चाहे उर्दू कहें या हिन्दी किन्तु एक आम भाषा हिन्दुस्तानी की नीव डालेंगे। हमारी शिक्षा और साहित्य सम्बन्धी भाषा भिन्न हो सकती है, मगर साधारण व्यवहार के लिये एक भाषा होनी चाहिये। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये हमें जहाँ सम्भव हो आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन कर लेना चाहिये और उदार भाव से देने और लेने के वातावरण में ही ऐसा हो सकेगा। इसलिये मैं समझता हूँ कि शान्तिनिकेतन एक साधारण भाषा बनाने में सहायता बनाने के लिये बहुत ही नामी और उपयुक्त स्थान होगा।

हिन्दी और उर्दू—देशदूत में पण्डित वेङ्कटेश नारायण तिवारी ने एक लेख उर्दू के हिमायती एक बैरिस्टर के [illegible] लिखा है। जिसमें दिखलाया गया है कि सन् १९११ की मर्दुमशुमारी के समय संयुक्तप्रान्त में ९० प्रतिशत से अधिक आदमी हिन्दी बोलने वाले थे और उर्दू बोलने वाले केवल ८ प्रतिशत थे। उर्दू के एक बहुत बड़े कोष रहंगे आसफ़िया में जो शब्द आये हैं उनमें हिन्दी के ३९००० अरबी के ७६०० फ़ारसी के ६४०० संस्कृत के ५०० और अन्य भाषाओं के २०० शब्द हैं। इससे कोष के संग्रहकर्ता ने परिणाम निकाला है कि हमारी जबान (उर्दू) में हिन्दी के अलफ़ाज़ तमाम ज़बानों से ज्यादा हैं जा बमुक़ाबला कुल मजमुए के आधे के क़रीब हैं। इससे साफ़ साबित होता है कि हमारी ज़बान की असली ज़मीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या बुनियाद हिन्दी है। पस जो हजरात हमारी ज़बान को खींचतान कर अरबी की तरफ़ ले जाना चाहते हैं वह एक ऐसी ग़लती का इरतकाब करते हैं जिससे इस ज़बान की फ़ितरत (प्रकृति) बिगड़ जायगी। अब प्रश्न उठता है कि उर्दू के ५४ हजार शब्दों में जो १४ हज़ार अरबी फ़ारसी के विदेशी शब्द हैं इनसे ही सन्तोष नहीं। इनमें से कुछ अप्रचलित शब्द क्या घटाये भी नहीं जा सकते ?

पोस्टआफ़िस में हिन्दी—राज्यपरिषद में एक प्रश्न के उत्तर में जो बातें कही गईं उनसे मालूम पड़ता है कि भारत की राजधानी नयी दिल्ली के पोस्टआफ़िस में हिन्दी में मनीआर्डर नहीं लिये जाते। इसके विपरीत उर्दू के लिखे हुए मनीआर्डर ले लिये जाते हैं। राज्य-परिषद् में आश्वासन दिया गया है कि भविष्य में हिन्दी के साथ ऐसा सलूक नहीं किया जायगा। पंजाब में भी हिन्दी की ऐसी ही दुर्दशा थी। वहाँ आन्दोलन हुआ और हिन्दी सेवकों ने एक सप्ताह के भीतर एक लाख हिन्दी पते के पत्र डाकघर में डलवाये। अब वहाँ हिन्दी के पत्र पढ़ने वाले रखे गये हैं। दिल्ली के हिन्दी प्रेमी भाइयों को इसके लिये उद्योग करना चाहिये।

अंग्रेज़ी वाले निकम्मे हो जायँगे—अभी कुछ दिन पहले हिन्दू-विश्वविद्यालय के साइन्स कालेज में व्याख्यान देने के लिये पण्डित जवाहरलाल नेहरू बुलाये गये थे। उनसे अंग्रेज़ी में व्याख्यान देने के लिये कहा गया। आपने उत्तर में कहा कि यद्यपि अंग्रेज़ी में भाषण देने में मुझे कोई एतराज़ नहीं है फिर भी सिद्धान्त की दृष्टि से मेरी इच्छा हिन्दुस्तानी में ही बोलने की है। आपने यह भी कहा कि इस समय भारत में अनेक क्रान्तियाँ हो रही हैं उनमें एक तो यही है कि हमारा कार्य अब अंग्रेज़ी में न होकर हिन्दुस्तानी में होगा। इससे जो केवल अंग्रेज़ी जानते हैं, हिन्दुस्तानी नहीं समझ सकते, वे निकम्मे हो जायँगे।

देशी भाषा में कार्यवाही—संयुक्तप्रान्तीय हाई स्कूल तथा इंटरमीजियट बोर्ड की बैठक में श्रीयुत लालबहादुर शास्त्री ने एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्ताव रखा था कि बोर्ड की उपसमितियों की कार्यवाही —यदि कमेटी के सदस्य एक मत से राज़ी हों तो—हिन्दी या उर्दू में लिखी जाया करे। इस प्रस्ताव को चौदह कमेटियों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। अब बोर्ड ने तय किया है कि कमेटियों की कार्यवाही हिन्दी या उर्दू में लिखी जा सकेगी; किन्तु बोर्ड के उपयोग के लिये उसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी देना पड़ेगा।

नागरी सप्ताह—आगरा नागरी प्रचारिणी सभा ने अपने वार्षिकोत्सव के साथ नागरी सप्ताह मनाया। १७ फ़रवरी को भोले बाबा के सभापतित्व में सभा के नये भवन में सर्व धर्म सम्मेलन हुआ। १८ फ़रवरी को अदालतों में नागरी प्रचार किया गया। शाम को सभा हुई जिसमें श्रीयुत महेन्द्र जी ने अदालतों में हिन्दी प्रचार की गति का दिग्दर्शन कराया। सभा की ओर से आगरे की दीवानी कचहरी में एक अर्ज़ीनवीस बैठता है जो मुफ़्त में नागरी में अर्ज़ियाँ लिख दिया करता है। अब श्रीयुत सेठ मटरूमल बैनाडा ने इस कार्य के लिए एक हिन्दी टाइपराइटर भी दे दिया है। १९ फ़रवरी को हाई स्कूल के विद्यार्थियों का वाद-विवाद हुआ। विषय था 'देशोद्धार के लिये खद्दर का प्रयोग आवश्यक है।' इसके बाद मिडिल के विद्यार्थियों का और फिर कालेज के छात्रों का वाद-विवाद हुआ। कुछ विचित्र जीवजन्तुओं पर मैजिक लैण्टन द्वारा प्रोफ़ेसर नवलकिशोर सिंह का भाषण हुआ। २० फ़रवरी को हास्य सम्मेलन हुआ। पण्डित हरिशंकर शर्मा कवि-रत्न सभापति और हिन्दी नवरस तथा साहित्य सन्देश के सम्पादक श्रीयुत गुलाब राय जी मुख्य वक्ता थे। आपने बतलाया कि जो बेजोड़ हो, असमंजस हो और अशुभ न हो वही हास्यरस की श्रेष्ठ सामग्री है। व्रजभाषा में खुसरो, रहीम, कबीर, तुलसी, सूर, बिहारी, बेनी, घाघ आदि की रचनाओं में हास्य रस की सामग्री है। संस्कृत हास्य पर प्रोफ़ेसर कैलाशचन्द्र एम० ए० ने, बंगला हास्य पर श्रीयुत हरप्रसाद बागची ने, पहाड़ी हास्य पर श्रीयुत पार्तीराम काला ने, मराठी हास्य पर श्रीयुत श्रावणेराम सापाने ने, उर्दू हास्य पर श्रीयुत लतीफ़ुद्दीन अहमद ने, मारवाड़ी हास्य पर प्रोफ़ेसर जुगलसिंह ने अच्छा व्याख्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। अन्त में राष्ट्रभाषा के हास्य पर तथा "सम्पादक जन्तु" पर सभापति जी का भाषण हुआ। २२ फ़रवरी को साहित्यिक पार्लिमेंट का अधिवेशन हुआ। स्वराष्ट्र मन्त्री श्रीयुत महेन्द्र ने अपने मन्त्रियों का परिचय दिया। शृङ्गार निरोधक बिल पर पक्ष विपक्ष में खूब मज़ेदार बहस हुई। यह जलसा बहुत ही दिलचस्प रहा। उत्सव सफलता के साथ पूर्ण हुआ।

परीक्षा का माध्यम—संयुक्तप्रान्तीय हाई स्कूल और इण्टरमीजियट बोर्ड ने तय किया है कि सन् १९४१ से हाई स्कूल परीक्षा में बैठनेवालों को अंग्रेज़ी को छोड़ कर और सभी प्रश्नपत्रों का उत्तर हिन्दी या उर्दू में लिखना पड़ेगा। सन् १९४० से इण्टरमीजियट के विद्यार्थी भी अंग्रेज़ी, लैटिन, ग्रीक, हिब्रू और अन्य यूरोपियन भाषाओं को छोड़ कर शेष प्रश्नपत्रों का उत्तर हिन्दी या उर्दू में लिख सकेंगे। हाई स्कूल के कोई विद्यार्थी यदि प्रश्नपत्रों का उत्तर अंग्रेज़ी में लिखना चाहेंगे तो विशेष स्थिति में हाई स्कूल और इन्टरमीजियट बोर्ड के अध्यक्ष अथवा उनके प्रतिनिधि उन्हें ऐसी आज्ञा दे सकेंगे। इस निश्चय पर शिक्षा सचिव महोदय की भी स्वीकृति मिल चुकी है।

राष्ट्रभाषा ट्रेनिङ्ग स्कूल—गोहाटी आसाम में राष्ट्रभाषा ट्रेनिङ्ग स्कूल खोला गया है। उस दिन "राष्ट्रभाषा जिन्दाबाद" के नारे लगाते हुए एक जलूस शहर भर में घूमा। प्रधान मन्त्री माननीय श्री योगीनाथ बारदोलो ने झण्डा ऊँचा किया। प्रधान मन्त्री जी को अभिनन्दन पत्र दिया गया। केवल एक महीने से हिन्दी का अभ्यास आरम्भ करनेवाले विद्यार्थी ने अभिनन्दन पत्र पढ़ कर सुनाया। कितने ही सज्जनों के शुभ-सन्देश आये थे। गोहाटी के प्रतिष्ठित मारवाड़ी सज्जन श्री गणपतराम जी ने हिन्दी-उर्दू के भेद को मिटाने का अनुरोध किया। प्रधान मन्त्री जी ने कहा कि आज से सात-आठ वर्ष पहले मैंने राष्ट्र-भाषा प्रचार के जिस पौधे को आसाम में लगाया, उसका सुमधुर फल आज मुझे चखने को मिल गया। इस आन्दोलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के फल-स्वरूप प्रान्त के हाई स्कूल में राष्ट्रभाषा को अनिवार्य स्थान मिला है और शिक्षकों को तैयार करने के इस विद्यालय का उद्‌घाटन भी मेरे ही हाथों हो रहा है। काँग्रेस ने हिन्दी-हिन्दुस्तानी को जिस राष्ट्रभाषा के रूप में ऐलान किया है, हमारा फर्ज है कि हम उसे बड़े प्रेम, श्रद्धा, उत्साह और सहानुभूति के साथ सीखें। जिससे देश के तमाम प्रान्तों तथा जनता के साथ हम आसानी से अपना हार्दिक सम्बन्ध जोड़ सकें। हमारी हार्दिक इच्छा है कि एक कोने में पड़ा हुआ आसाम भी अति शीघ्र राष्ट्रभाषा सीख कर सारे देश के साथ अपने को संगठित कर दे। हिन्दी प्रचार के कारण यह समझना कि हमारी मातृभाषा की अवनति होगी सरासर ग़लत और निर्मूल धारणा है। इससे हमारी मातृभाषा का साहित्य पुष्ट एवं समृद्ध होगा। इस स्कूल के शिक्षार्थी पूरी योग्यता लेकर हाई स्कूलों में जायँ और वहाँ राष्ट्रीय वातावरण का निर्माण करें। जिनके हृदय में राष्ट्र-सेवा की लगन हो वे ही जीवन की सफलता के लिये इधर आवें।

वंगीय ग्रन्थागार परिषद्—बङ्गाल में एक ग्रन्थागार परिषद् स्थापित है। ग्रन्थागारों की व्यवस्था संबन्धी कला की शिक्षा देने के लिये यह प्रति वर्ष प्रबन्ध करती है। इस वर्ष भी १ मई से शिक्षा का प्रबन्ध होगा। ६ सप्ताह का पाठ्यक्रम रखा गया है। जो लोग ग्रन्थागार संबन्धी अभ्यास करना चाहते हैं, जो किसी स्कूल या पुस्तकालय के ग्रन्थागार के अध्यक्ष हों और जो कम से कम मैट्रिक पास हों उन्हें आवेदन पत्र देना चाहिये। आवेदक को बङ्गला के अतिरिक्त हिन्दी-उर्दू, फ़्रेंच या जर्मन में से किसी एक भाषा का जानना भी आवश्यक है। इसमें ग्रन्थ, रजिस्टर, पुस्तकों का चुनाव, सूची-निर्माण, वर्गीकरण, निर्देश-कार्य तथा ग्रन्थागार-संचालन की शिक्षा दी जायगी। डाक्टर निहाररजन राय, केन्द्रीय ग्रन्थागार, कलकत्ता युनिवर्सिटी के पास आवेदन पत्र भेजना चाहिये।

रोमन लिपि बनाम देवनागरी—मुझे मालूम हुआ है कि आसाम में कुछेक जातियों को देवनागरी की जगह रोमन लिपि में लिखना-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ना सिखाया जा रहा है। मैं अपनी यह राय तो जाहिर कर ही चुका हूँ कि हिन्दुस्तान में सर्वमान्य हो सकनेवाली अगर कोई लिपि है तो वह देवनागरी ही है, फिर भले ही उसमें सुधार करने की गुंजाइश हो या न हो। शुद्ध वैज्ञानिक और राष्ट्रीय दृष्टि से देवनागरी की श्रेष्ठता मुसलमान भाई अपनी राज़ी से जब तक स्वीकार नहीं करते, तब तक उर्दू या फ़ारसी लिपि भी ज़रूर जारी रहेगी। मगर उपर्युक्त प्रश्न के लिए यह बात अप्रस्तुत है। इन दो लिपियों के साथ रोमनलिपि का मेल नहीं बैठता। रोमनलिपि के समर्थक तो इन दोनों ही लिपियों को रद्द कर देने की राय देंगे, किंतु विज्ञान तथा भावना दोनों ही दृष्टियों से रोमन लिपि नहीं चल सकती। रोमन लिपि का मुख्य लाभ इतना ही है कि छापने और टाइप करने में यह लिपि आसान पड़ती है। किंतु करोड़ों मनुष्यों को इसे सीखने में जो मेहनत पड़ती है उसे देखते हुए इस लाभ का हमारे लिए कोई मूल्य नहीं। लाखों-करोड़ों को तो देवनागरी में या अपने-अपने प्रान्त की लिपि में ही लिखा हुआ अपने यहाँ का साहित्य पढ़ना है, इसलिए उन्हें रोमन लिपि ज़रा भी सहायता नहीं पहुँचा सकती। करोड़ों हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए भी देवनागरी का सिखलाना आसान है, क्योंकि अधिकांश प्रान्तीय लिपियाँ देवनागरी से ही निकली हैं। मैंने इसमें मुसलमानों का समावेश जान-बूझकर किया है। मसलन, बंगाल के मुसलमानों की मादरी ज़बान बंगाली है, और तामिलनाड के मुसलमानों की तामिल। उर्दू-प्रचार के वर्तमान आंदोलन का स्वाभाविक परिणाम यह होगा, कि हिन्दुस्तान भर के मुसलमान अपनी-अपनी प्रांतीय मातृभाषा के अलावा उर्दू भी सीखेंगे। किन्हीं भी परिस्थितियों में क़ुरान शरीफ़ पढ़ने के लिए उन्हें अरबी तो सीखनी ही पड़ेगी। मगर करोड़ों हिन्दू-मुसलमानों के लिए रोमन लिपि का प्रयोजन तो अँग्रेज़ी सीखने के सिवा दूसरा कुछ भी नहीं। इसी तरह हिन्दुओं को अपने धर्मग्रन्थ मूल भाषा में पढ़ने के लिए देवनागरी सीखने की जरूरत पड़ती है, और वे उसे सीखते ही हैं। इस तरह देवनागरी लिपि को सर्वमान्य बनाने के पीछे दृढ़ कारण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर हम रोमनलिपि को दाख़िल करें तो वह निरी भाररूप ही साबित होगी और कभी लोकप्रिय नहीं बनेगी। सच्ची लोक-जागृति जब हो जायगी तब इस प्रकार के भाररूप दबाव रह ही नहीं सकते। और जन-जागृति तो बहुत जल्दी आने वाली है। फिर भी लाखों-करोड़ों को जगाने में वक्त लगेगा। जागृति कोई ऐसी चीज़ तो है नहीं, जो सांचे में ढाल कर बनाई जा सकती हो। यह तो अगम रीति से आती हुई प्रतीत होती है। देश के कार्यकर्त्ता तो केवल लोगों की मनोवृत्ति की पेशबीनी करके उसके आने में जल्दी कर सकते हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति स्वीकार

श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल वैद्य, संग्रह मंत्री

निम्नलिखित सज्जनों ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संग्रहालय के लिये निम्नांकित पुस्तकें भेजी हैं। प्रेषकों को इस कृपा के लिये अनेक धन्यवाद।

भारतीय रसायन शास्त्र— इसमें प्राचीन भारतीय रसायन शास्त्र विशेषकर कीमियाँ के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है। इसमें सोना, चाँदी बनाने की कई विधियाँ दी गई हैं, जो प्रयोग सापेक्ष्य है। साथ ही आरम्भ में काकचण्डीश्वर तन्य भी दे दिया गया है। आठ आने में वैद्यराज पण्डित विश्वेश्वर दयालु जी बरा लोकपुर, इटावा से प्राप्त हो सकता है।

भारत की नारी शक्ति—आयुर्वेदाचार्य पं० रामेश्वर दयालु शर्मा (दयालु फार्मेसी, चांदपुर, बिजनौर) ने अपनी परलोकगता पत्नी के स्मरणार्थ स्त्री पुरुष के संबन्ध में यह विवेचनात्मक पुस्तक लिखी है। साथ ही कुछ आदर्श स्त्रियों के चरित्र और स्त्रियों के स्वास्थ्यरक्षक विषय तथा उनकी प्रमुख बीमारियों का वर्णन चिकित्सा सहित लिखा गया है। पुस्तक उपयोगी है। दाम ॥)

गीताज्ञान--श्रीमद्भगवद्गीता के ज्ञान को हिन्दी छन्दों में वर्णन किया गया है। बीच बीच में कुछ भजन और गीत भी दिये गए हैं। कविता सरल सब की समझ में आने योग्य है। रंगून शारदासदन गर्ल्स हाईस्कूल के संगीत शास्त्री पं० कालीप्रसाद त्रिपाठी भृंग ने इसे लिखा है और उन्हीं से एक रुपये में प्राप्त होगा।

बुन्देलकेशरी—बुन्देलकेशरी महाराज छत्रसाल की वीर कहानी नाटक के रूप में दिखलायी गई है। पुस्तक की भाषा सजीव और जोरदार है। पात्रों का चुनाव भी बढ़िया हुआ है। मोहिनी का पार्ट बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। प्रायः स्त्री पात्रों का वर्णन देशभक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण और आदर्श हुआ है। किन्तु उनकी भाषा कहीं कहीं बहुत ऊँची हो गयी है। पण्डित श्यामाकान्त पाठक साहित्यशास्त्री बी-लिट कविरत्न जी को इसके लिखने में पूरी सफलता मिली है। मूल्य ।||) पता प्राप्राइटर, कर्मवीर प्रेस, जबलपुर।

चर्खा नाटक—श्रीमती राजकिशोरी "राज" संचालिका चर्खाभवन, अछेछा, पो० हापुड़, जिला मेरठ ने इसे प्रकाशित किया है और श्रीयुत चन्द त्यागी जी ने लिखा है। इससे स्वदेशी आन्दोलन और सत्याग्रह के दृश्य दिखाये गये हैं। इसे नाटक के ढंग पर तैयार किया गया है। दाम ।)।

गूढ़ार्थ चिन्तामणि—कोगैना (पो० बरताल जिला सीतापुर) निवासी पण्डित लाल जी अग्निहोत्री ने इसकी रचना की है। इसे गूढ़ार्थ शब्दों का छोटा कोष ही समझना चाहिये। याद करने के लिये यह सुगम और उपयुक्त है। दाम ।), प्रेषक पंडित राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी व्रजेश गोनी, अतरौली, हरदोई।

नलिनीदल—श्रीयुक्त देवशंकर त्रिवेदी एम० ए० ने समय-समय पर जो कविता-रचना की है उनमें से १६ का इसमें संग्रह है। साथ ही इसके द्वितीय भाग में पाँच पत्र हैं जिनमें वर्तमान काल के एक शिक्षित युवक का जीवन अंकित है। कविता भावमयी है। पत्र भी कवितामय तथा उच्चाशय पूर्ण है। मूल्य ।) इसके प्रेषक भी पंडित राघवेन्द्र शर्मा जी हैं।

व्रजेशविनोद—पण्डित राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी व्रजेश जी की विविध भाव भूषित कविताओं का संग्रह है। कविता ओजपूर्ण, भाव बोधगम्य और शब्द-योजना चटकदार है। संग्रह उत्तम है। दाम ।=)

समाज और साहित्य—इसमें समाज, कविता और कवि, विवाह, कविता का कलियुग और कौटुम्बिक जीवन नामक पाँच निबन्ध श्रीयुत आनन्द कुमार जी (पण्डित रामनरेश त्रिपाठी के सुपुत्र) के लिखे हुए छापे गये हैं। सभी निबन्ध विवेचनात्मक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचनात्मक हैं। आजकल के कवियों को आप ने बुरी तरह से आड़े हाथों लिया है। किन्तु फिर भी मालूम पड़ता है आपने उनके साथ अधिक अन्याय नहीं किया। विवेचना की बारीकी सराहनीय है। दाम ।।।) मिलने का पता-प्रकाशक हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग।

पृथ्वीराज-रासो –सांलन नरेश के राजगुरु साहित्याचार्य पण्डित मथुरा प्रसाद दीक्षित ने चन्दबरदाईकृत रासो प्रथम समय का सम्पादन अर्थ और टिप्पणी के साथ प्रकाशित किया है। रासो में कथाओं और कविताओं का इतना प्रक्षेप हुआ है कि ऐतिहासिक विद्वानों को उसकी संगति बैठाना कठिन हो रहा है। किन्तु आपने एक ऐसी प्राचीन प्रति से इसका सम्पादन किया है जिसमें प्रक्षिप्त भाग नहीं है और चन्द के कथनानुसार इसमें सात हजार ही पद्य हैं। अर्थ और टिप्पणियों के कारण पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है। यदि आप समूचे रासो का सम्पादन शीघ्रता के साथ कर दें तो साहित्य का बड़ा उपकार होगा। वर्तमान भाग ।।) में मोतीलाल बनारसीदास, सैदमिट्ठा बाज़ार, लाहौर से प्राप्त होता है।

ज्योतिर्मयी—श्रीयुत अनिरुद्ध जी ने तीन किरणों से युक्त इस ज्योतिर्मयी की दोहों में रचना की है। प्रत्येक किरण में सौ-सौ चुने हुए बढ़िया दोहे हैं। कविता अच्छी है। आठ आने में श्रीयुत अनिरुद्ध जी ३६६, खद्दर बाज़ार झाँसी के पते पर पुस्तक मिलेगी।

काव्य कल्पना—पण्डित गंगा प्रसाद पाण्डेय ने इसमें कवि का आदर्श, आलोचना, हमारा साहित्य और साम्यवाद तथा प्रगतिशील हिन्दी कविता नामक चार निबन्ध और महादेवी, प्रसाद, जोशी, रामकुमार वर्मा, भगवती चरण तथा हरिवंश राय पर आलोचनात्मक निबन्ध लिखे हैं। आलोचना गंभीर, विचार पूर्ण और उच्च साहित्यिक है। एक रुपये में छात्र हितकारी पुस्तकालय, दारागंज, प्रयाग से पुस्तक प्राप्त होती है।

हिन्दी रस गंगाधर—रस गंगाधर संस्कृत में रीति काव्य का बहुत प्रसिद्ध और उच्च श्रेणी का ग्रन्थ है। श्रीयुक्त पुरुषोत्तम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्वेदी जी ने उसका अनुवाद किया है। यह उसी ग्रन्थ का दूसरा भाग है। अभी अलङ्कार-संबन्धी तीसरा भाग छपना अवशेष है। आरंभ में विद्वत्तापूर्ण भूमिका है। पुस्तक में संस्कृत विवरण को हिन्दी में अच्छी तरह समझा कर प्रतिपादित किया गया है। हिन्दी में भी यह कृति, आशा है, संस्कृत के समान ही समादृत होगी। चतुर्वेदी जी ने इसे संपादन कर प्रशंसनीय काम किया है और काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने श्री सूर्यकुमारी पुस्तक माला में इसे प्रकाशित कर हिन्दी का उपकार किया है। साढ़े तीन रुपये में पुस्तक काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्राप्त होगी।

औपसर्गिक रोग—प्रथम और द्वितीय दो भागों में पुस्तक पूर्ण हुई है। पहले भाग में तीन अध्याय हैं। जिनमें निदान और चिकित्सा के सामान्य सिद्धान्तों के बाद विसर्प, न्यूमोनिया, सुषुम्नावरण शोथ, यूषमेह, आन्त्रिक ज्वर, विशूचिका, राजयक्ष्मा, कुष्ट, धनुर्वात, इनफ्लूएञ्जा, कुकुरखांसी, प्रेम मालाज्वर, रोहिणी आदि पर एलोपैथी ढङ्ग से विवेचन कर एलोपैथी ढङ्ग से ही चिकित्सा निर्देश किया गया है। दूसरे भाषा में पाँच अध्याय हैं जिनमें फिरंग कालाआज़ार, विषमज्वर, दण्डक ज्वर, पीत ज्वर, मसूरिका, यरिसर्प, आमवाद रामान्तिका, कृमिजन्य रोग श्लीपद आदि तथा सांप के काटने और उसकी चिकित्सा का विवेचन एलोपैथी ढङ्ग से हुआ है। कहीं कहीं टिप्पणी में आयुर्वेदिक प्रमाण भी दे दिये गये हैं। आधुनिक ढङ्ग से औसर्गिक रोगों का निदान तथा विवरण समझने में वैद्यों को भी इससे सहायता मिल सकती है। किन्तु चिकित्सा में उन्हें अधिक सहायता नहीं मिल सकती। पुस्तक अपने ढंग की अनूठी और उत्तम है। लेखक हैं हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डाक्टर भास्कर गोविन्द धाणेरकर। मूल्य पहले भाग का ३॥) और दूसरे भाग का ४) है। उन्हीं से हिन्दू युनिवर्सिटी, बनारस के पते पर मिलेगी।

मधूलिका—श्रीयुत पण्डित रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' की खड़ी बोली की गीति-कविताओं का इसमें संग्रह है। चौंतीस विषयों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग-अलग कविताएँ हैं। सब में कोई न कोई उच्छ्वास है, कोई न कोई लालसा है, कहीं पिपासा है, कहीं तृष्णा है, कहीं उलाहना है, कहीं आत्म-परितृप्ति की अभिलाषा है। शब्दावली मनोहर है, रचना ललित है। अनुभूति की बातें मधुर हैं, गम्भीर हैं। कल्पना सुन्दर है, उड़ान ऊँचा है। शृङ्गार रस की विचार-धारा नवीन है, आवरण-युक्त है। उत्प्रेक्षा अच्छी है, ऊँची है, सुझाव सुलझनदार है। अलङ्कारों का उपयोग अधिकांश में उपयुक्त स्थान पर हुआ है। शब्द-योजना मनोहर है, ललित है। सारांश यह कि पुस्तक इसके कर्ता को एक अच्छे कवि के रूप में साहित्य-क्षेत्र में लाकर खड़ा करती है। कवि का व्यक्तित्व और शैली स्वतन्त्र है, अपनी निज की है। पुस्तक के आरम्भ में पण्डित विनय मोहन शर्मा, स्वराज्य कार्यालय, खण्डवा की लिखी हुई एक विचारपूर्ण साहित्यिक भूमिका है। कवि को इस सफलता के लिये बधाई है। पुस्तक दो रुपये में साधना-मन्दिर, प्रयाग से प्राप्त होगी।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

साहित्य समिति का पाँचवाँ अधिवेशन

साहित्य समिति का पाँचवाँ अधिवेशन रविवार फाल्गुन सौर १३, संवत् १९९५ तारीख़ २५ फ़रवरी १९३९ को ५ बजे सायंकाल से सम्मेलन के कार्यालय में श्री डा० बाबूराम सक्सेना के सभापतित्व में हुआ। पिछले अधिवेशन की कार्यवाही स्वीकृत हो जाने के पश्चात्—

१—साहित्य मन्त्री ने साहित्य विभाग के वार्षिक आय-व्यय का अनुमान-पत्र उपस्थित किया। श्री सक्सेना जी ने प्रस्ताव किया कि कार्य विवरण और लेख माला छपाने के लिए शिमला की स्वागत-समिति से जो ३००) मिले हैं वह इस विभाग की आय में दिखाये जायँ। प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि साहित्य रत्न व्याख्यान माला के ख़र्च के लिए १००) रखा जाय। साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि सम्मेलन पत्रिका के ख़र्च के लिए केवल ६०) (शुल्क का आधा) प्रबन्ध विभाग से लिया जाय।

शेष अनुमान पत्र स्वीकृत हुआ।

२—साहित्य मन्त्री ने 'प्रेमघन सर्वस्व' के प्रकाशन का प्रश्न पेश किया। निश्चय हुआ कि पुस्तक प्रकाशित की जाय और प्रेमघन जी के आठों चित्र जो श्री दिनेश नारायण उपाध्याय से मिले हैं पुस्तक में छापे जायँ।

३—साहित्य मन्त्री ने श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी प्रेषित महाकवि नन्ददास प्रणीत "भ्रमर गीत" प्रकाशित करने का विषय पेश किया। निश्चय हुआ कि समिति इसे प्रकाशित न कर सकेगी। किताब वापस भेज दी जाय।

रामकुमार वर्मा
साहित्य मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य समिति का तृतीय अधिवेशन

कार्य समिति की स्थगित बैठक सोमवार पौष १८ संवत् १९९५ तारीख २ जनवरी ३९ को १ बजे से कार्यालय में ९ सदस्यों की उपस्थिति में हुई। श्री पुरुषोत्तम दास जी टंडन भी उपस्थित थे।

१—नियमानुसार श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

२—प्रधान मंत्री ने समिति के गत दो अधिवेशनों की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जो स्वीकृत हुई।

३—प्रधान मंत्री ने सहायक मंत्री की नियुक्ति का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि सम्प्रति कार्य समिति इस विषय का कोई निश्चय न करे।

४—जमुनापार हिन्दी विद्यापीठ आजकल विद्यापीठ के कोष में धन की कमी के कारण शिक्षा विभाग बन्द कर दिया गया। विचार हुआ कि यह उचित है कि सम्मेलन की परीक्षाओं के अनुसार शिक्षा देने के लिए एक स्थानीय केन्द्र जारी रहे। निश्चय हुआ कि परीक्षा समिति को शिफ़ारिश की जाय कि १०००) वार्षिक तक इस काम में ख़र्च करे। इस वर्ष के जो महीने बाक़ी हैं अर्थात् ३० माघ तक १५०) स्वीकार किए जाते हैं।

५—प्रधान मंत्री ने लेखकों की तथा दुर्विजय सिंह की वेतनवृद्धि का प्रश्न उपस्थित किया और एतदर्थ उप समिति की रिपोर्ट पेश की। प्रबन्ध मंत्री जी ने कहा कि सेफ़ की ताली खो गई है। जहाँ तक अनुमान होता है कि ताली कार्यालय के लेखकों में से किसी के पास है। निश्चय हुआ कि वेतन वृद्धि का विषय स्थगित रखा जाय।

६—६ नवम्बर की कार्य समिति के निश्चय (२) के अनुसार पंजाब प्रान्त तथा दिल्ली में हिन्दी के प्रचार के लिए प्रचार समिति के संगठन का विषय पेश हुआ। निश्चय हुआ कि पंजाब तथा दिल्ली में प्रचार करने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की एक उप समिति बनाई जाती है। आवश्यकता दिखलाई पड़ने पर

४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य समिति इन नामों में वृद्धि कर सकेगी।

१—श्री अमरनाथ विद्यालंकार (संयोजक)
२— " भीमसेन "
३— " रामगोपाल गुप्त शिमला।
४— " जगद्धर शर्मा गुलेरी लायलपुर।
५— " स्वामी केशवानन्द अबोहर।
६— " तेगराम "
७— " शन्नो देवी लाहौर।
८— " पुत्तूलाल वर्मा दिल्ली।
९— " वशिष्ट जी लाहौर।
१०— " चन्द्रगुप्त विद्यालंकर—साहित्य भवन हास्पिटल रोड, लाहौर।
११— " देवचन्द विशारद, हिन्दो भवन, लाहौर,

साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि यह नाम अभी प्रकाशित न किए जायँ। श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन इस विषय में पत्र-व्यवहार करके नाम निश्चित करके कार्यालय को देंगे।

७—संग्रहालय की पुस्तकें पढ़ने के लिए दिए जाने के सम्बन्ध की नियमावली उपस्थित की गई। तदनुसार नियम स्वीकृत हुए।

८—सम्बद्धता के सम्बन्ध में अखिल अछूत हरिजन समाज, देवरिया और हिन्दी प्रचारिणी सभा, शिमला के आवेदन पत्रों पर विचार का विषय पेश हुआ। शिमला की हिन्दी प्रचारिणी सभा का आवेदन पत्र नियमानुसार स्वीकृत हुआ। अखिल अछूत हरिजन समाज, देवरिया के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि उसको लिखा जाय कि उक्त सभा इस शर्त पर स्वीकार की जाती है कि वह अपने उद्देश्यों में "हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रचार और उन्नति करना" यह भी जोड़ ले।

९—प्रधान मन्त्री ने आय-व्यय परीक्षक की रिपोर्ट एक एक करके पढ़ सुनाई। निश्चय हुआ कि:—

१—कच्ची रोकड़ भी रक्खी जाय और पक्की भी। किन्तु हिसाब पक्की रोकड़ पर दूसरे दिन अवश्य उतार लिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—रोकड़ पर अर्थ मन्त्री जी महीने में एक बार अपना हस्ताक्षर अवश्य करें।

३—जमा ख़र्च बही रखी जाय।

४—इसके अनुसार कार्य हो।

५—इनाम शब्द के स्थान पर विशेष पारिश्रमिक लिखा जाय।

६—जो रसीदें नहीं हैं वे लगा ली जायँ।

७—वापसी टिकट जहाँ-जहाँ के मिल सकें लिए जायँ।

८—प्राप्ति की सूचना सूचक न आने वाली रसीदों के स्थान पर पूर्व प्राप्त बिलों पर परीक्षा मन्त्री जी के हस्ताक्षर करा लिए जाया करें।

९—छोटी से छोटी रक़म के लिए भी रसीदें काटी जायँ।

१०—अर्थ लेखक प्रतिमास प्रत्येक विभाग के डिस्पैच रजिस्टरों की जाँच किया करें।

११—निश्चय हुआ कि टिकट की कमी के सम्बन्ध में लेखक से जवाब माँगा जाय और विभागीय मन्त्री के पास भेजा जाय।

१२—प्रथमालंकार निरूपण और साहित्य रत्न माला की कमी का जमा ख़र्च कर लिया जाय।

१३—निश्चय हुआ कि मद्रास सम्मेलन के मन्त्री से अनुरोध किया जाय कि वे बचत का आधा कार्यालय को भेज दें।

१४—अर्थ लेखक और खजान्ची का काम पृथक करने के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि धनाभाव के कारण ऐसा होना सम्भव नहीं है।

१०—परीक्षा विभाग के अस्थायी लेखक श्री मधुसूदन दुबे का स्थायी नियुक्ति के सम्बन्ध में प्रार्थना पत्र उपस्थित हुआ। निश्चय हुआ कि यह विषय स्थगित रखा जाय।

११—प्रधान मन्त्री ने रत्नकुमारी पुरस्कार का रुपया भेजने के सम्बन्ध में सेठ गोविन्ददास जी का पत्र उपस्थित करते हुए बताया कि प्रारम्भिक ख़र्च के लिए वह २५) भेजने के लिए लिख रहे हैं। पुरस्कार का रुपया अधिवेशन के पहले अवश्य भेजवा देंगे इसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिम्मेदारी ले रहे हैं। निश्चय हुआ कि उन्हें लिखा जाय कि हमारे यहाँ ऐसा नियम नहीं है इस लिए जब रुपया आ जायगा तभी कार्यवाही प्रारम्भ की जायगी।

१२—नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा के सहायतार्थ प्रार्थना पत्र पर विचार किया गया। निश्चय हुआ कि यह विषय परीक्षा समिति के पास विचार के लिए भेजा जाय।

१३—द्विवेदी दिवस मनाने के सम्बन्ध में जोधपुर के विद्यार्थी संघ का पत्र उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि उन्हें लिखा जाय कि जिस दिन वे उचित समझें मनावें।

१४—प्रधान मन्त्री ने माथुर चतुर्वेदी पुस्तकालय द्वारा प्रेषित दो प्रस्ताव उपस्थित किए। प्रथम के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव आगामी अधिवेशन, बनारस भेजा जाय और दूसरे के सम्बन्ध में उन्हें लिखा जाय कि सम्मेलन का ध्यान इस ओर है और प्रस्ताव विचार के लिए स्थायी समिति में पेश किया जाय।

१५—प्रधान मन्त्री ने बताया कि संग्रहालय की पुस्तकों की सूची अभी तक पूर्ण नहीं हुई है। प्रबन्ध मन्त्री और संग्रह मन्त्री जी की सिफ़ारिश है कि दो लेखक और लगा कर सूची पूर्ण करा ली जाय। निश्चय हुआ कि संग्रह मन्त्री जी श्री ब्रजराज जी के परामर्श के अनुसार ५०)-६०) तक खर्च में सूची पूर्ण करा लें।

कार्य समिति का चतुर्थ अधिवेशन

कार्य समिति का चतुर्थ अधिवेशन रविवार फाल्गुन १४ संवत् १९९५ तारीख़ २६ फ़रवरी १९३९ को १ बजे दिन से सम्मेलन के संग्रहालय में श्री नरदेव शास्त्री के सभापतित्व में हुई। पिछले अधिवेशन की कार्यवाही स्वीकृत हो जाने के अनन्तर—

१—प्रधान मन्त्री ने प्रबन्ध विभाग, परीक्षा विभाग, साहित्य-विभाग, प्रचार विभाग तथा संग्रह विभाग का १३ मास का अनुमान-पत्र पेश किया। सर्व सम्मति से अनुमान पत्र स्वीकृत हुआ और निश्चय हुआ कि सम्मेलन के खाते में जो १३२७४॥≡)॥। की कमी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह इस प्रकार से पूरी की जाय—१००००) परीक्षा विभाग से, २०००) साहित्य रत्न माला से और १२७४॥।≡)॥। सुलभ साहित्य माला से तथा १५००) सुलभ साहित्य माला खाते से लेकर स्थायी कोष खाते में जमा किया जाय। साथ ही श्री व्रजराज जी का निम्नलिखित प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ।

"साहित्य विभाग में जितना मुनाफ़ा हो उसका आधा स्थायी कोष में जमा कर दिया जाया करे। मुनाफ़े का निर्णय प्रधान मन्त्री और साहित्य मन्त्री मिल कर करेंगे।"

२—शेवहद के साहित्य महाविद्यालय को सहायता देने का प्रश्न उपस्थित हुआ। निश्चय हुआ कि (१) श्री व्रजराज (२) श्री दयाशङ्कर दुबे और (३) श्री बाबूराम सक्सेना इन तीन सज्जनों की उपसमिति सहायतार्थ आए हुए सब पत्रों पर विचार करके अपना प्रस्ताव उपस्थित करे।

३—प्रधान मन्त्री ने लेखकों की वेतनवृद्धि तथा संग्रह लेखक की स्थायी नियुक्ति और १४) से २०) वेतन करने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि श्री टंडन जी, प्रधान मन्त्री और संग्रह मन्त्री आपस में सलाह कर उचित निर्णय करें।

४—प्रधान मन्त्री ने बताया कि वर्धा में राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के अन्तर्गत एक पुस्तकालय खोला गया है। उसके लिए समिति के मन्त्री ने सम्मेलन की प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति देने के लिए निवेदन किया है। निश्चय हुआ कि एक एक प्रति भेज दी जाय।

५—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् में राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधित्व के लिए नामों की सिफ़ारिश के सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री ने पुरानी नियमावली के विद्यालयों की सूची पढ़कर सुनाई। वह स्वीकृत हुई और निश्चय हुआ कि इन संस्थाओं को तथा बम्बई की हिन्दी विद्यापीठ तथा हिन्दी पढ़ाई वाले विश्वविद्यालयों को भी प्रतिनिधित्व का अधिकार देने की सिफ़ारिश स्थायी समिति में पेश की जाय।

६—प्रधान मन्त्री ने परीक्षा विभाग के लेखक श्री मधुसूदन दुबे जी के पृथक करण की सूचना दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७—प्रधान मन्त्री ने दिल्ली में स्थापित हिन्दी समाचार समिति को सहायता देने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि संचालक महोदय को सहानुभूति प्रदर्शक पत्र भेज दिया जाय और लिखा जाय कि धनाभाव के कारण सम्मेलन सहायता करने में असमर्थ है।

८—प्रधान मंत्री ने माली को अन्य कर्मचारियों की भांति कपड़ा दिए जाने का प्रश्न पेश किया। निश्चय हुआ कि उसको कपड़ा दिया जाय।

९—प्राधन मंत्री ने बताया कि पिछले वर्ष स्वीकृत बजट से अधिक ख़र्च हो गया था और ख़र्च का ब्योरा उपस्थित किया। ख़र्च स्वीकृत हुआ।

बाबूराम सक्सेना
एम० ए०, डी-लिट्
प्रधान मन्त्री

स्थायी समिति की तृतीय बैठक

स्थायी समिति की तृतीय बैठक रविवार फाल्गुन १४ संवत् १९९५ तारीख़ २६ फरवरी ३९ को ३ बजे दिन से श्री नरदेव शास्त्री के सभापतित्व में सम्मेलन के कार्यालय में हुई। पिछले अधिवेशन की कार्यवाही स्वीकृत हो जाने के अनन्तर—

१—सम्मेलन का १२ महीने के आय व्यय का अनुमान पत्र पढ़ कर सुनाया गया। सर्व सम्मति से अनुमान-पत्र स्वीकृत हुआ। यह भी निश्चय हुआ कि भविष्य में स्थायी समिति के अधिवेशन की सूचना के साथ अनुमान पत्र की भी एक एक प्रति सदस्यों के पास भेजी जाया करे।

२—प्रधान मन्त्री ने श्री राधामोहन गोकुल जी पुरस्कार समिति के संगठन का प्रश्न उपस्थित किया। निम्नलिखित सदस्यों की समिति निर्मित हुई—

१—श्री डा० बाबूराम सक्सेना
२—रामलखन शुक्ल (संयोजक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—गिरिजादत्त शुक्ल
४—भगवती प्रसाद बाजपेयी
५—श्री राधामोहन गोकुल जी स्मारक समिति का एक प्रतिनिधि।

३—उपनियम १८ (घ) के अनुसार प्रधान मन्त्री ने हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद में राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधियों के विषय में कार्य समिति की नीचे लिखी सिफ़ारिश पेश की।

(१) हिन्दी विद्यापीठ, प्रयाग (२) बिहार विद्यापीठ, पटना (३) गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद (४) काशी विद्यापीठ, काशी (५) गुरुकुल, हरद्वार (६) गुरुकुल, वृन्दाबन (७) महाविद्यालय, ज्वालापुर (८) ऋषिकुल, हरद्वार (९) प्रेम-महाविद्यालय, वृन्दाबन (१०) कन्या महाविद्यालय, जालंधर (११) कन्या विद्यालय, देहरादून (१२) महिला विद्यापीठ, प्रयाग (१३) गोवर्द्धन साहित्य विद्यालय, देवघर (१४) महाराष्ट्र विद्यापीठ, पूना (१५) महिलाश्रम, वर्धा (१६) जामिया इलमिया, दिल्ली (१७) हिन्दी प्रचारक विद्यालय, मद्रास।

इस सम्बन्ध में कार्य समिति की सिफ़ारिश मंजूर हुई।

४—प्रधान मन्त्री ने माथुर चतुर्वेदी पुस्तकालय, मैनपुरी की वार्षिक सभा द्वारा स्वीकृत नीचे लिखा प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित किया और इस सम्वन्ध में श्री काका कालेलकर तथा श्री श्यामबिहारी मिश्र के पत्र पढ़ सुनाए। निश्चय हुआ कि भाषा शैली के विषय में शिमला अधिवेशन में पर्याप्त विचार हो चुका है। साहित्य की भाषा कैसी होनी चाहिए इस बात का निश्चय भी वहीं पर हो चुका है और नवीन नियमावली के पृष्ठ २ पर दिया हुआ है। उपर्युक्त पुस्तकालय को सूचना दी जाय कि हिन्दुस्तानी के लिए हिन्दी का बलिदान किया जा रहा है—यह भ्रम मात्र है। हिन्दुस्तानी हिन्दी के ही अन्तर्गत एक शैली मात्र है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन केवल 'हिन्दी' शब्द को मान्य समझता है और उसी का प्रयोग करता है 'हिन्दुस्तानी' का नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्ताव

"मैनपुरी के हिन्दी प्रेमियों का यह अधिवेशन हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग, का ध्यान हिन्दी व हिन्दुस्तानी सम्बन्धी बढ़ते हुए आन्दोलन की ओर आकर्षित करता हुआ अनुमान करता है कि हिन्दुस्तानी के लिए शुद्ध हिन्दी का बलिदान करना हिन्दी साहित्य के लिए विघातक सिद्ध होगा। और उससे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उद्देश्यों पर आघात पहुँचेगा। अतः सम्मेलन के अधिकारियों से निवेदन करता है कि वे इस सम्बन्ध में सम्मेलन की उद्देश्य रक्षा और शुद्ध हिन्दी के साहित्यिक रूप के संरक्षण के लिए सुदृढ़ प्रयत्न करें।"

६—प्रचार मंत्री ने प्रचार समिति द्वारा स्वीकृत निम्नलिखित प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित किया।

"जो आय साधारण सदस्यों के शुल्क से तथा प्रचारकों के प्रयत्न से हो वह प्रचार समिति की सम्पत्ति समझी जाय।"

प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हुआ (पक्ष में १४ मत विपक्ष में १)

बाबूराम सक्सेना
एम० ए०, डी-लिट्
प्रधान मंत्री

संग्रहालय-समिति का चतुर्थ अधिवेशन

संग्रहालय-समिति का चतुर्थ अधिवेशन माघ सौर १६, १९९५, रविवार, २९ जनवरी १९३९ ई० को १॥ बजे दिन सग्रहालय भवन में डा० सत्यप्रकाश के सभापतित्व में हुआ। पिछली बैठक की कार्यवाही स्वीकृत हो जाने के अनन्तर

१—संग्रह-मन्त्री ने दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों की फाइलों को संग्रहालय में नियमित रूप से रखने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि मासिक पत्र जिल्द बांधकर रखे जायँ, शेष सब पत्र एक वर्ष के वास्ते सुरक्षित रखे जायँ।

२—संग्रह मन्त्री ने जिन पुस्तकों की एक से अधिक प्रतियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रहालय में हैं उनकी व्यवस्था का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि सम्पूर्ण पुस्तकों की सूची बन जाने पर उन पुस्तकों की पृथक सूची बनाई जाय जिनकी एक से अधिक प्रतियाँ हैं। तब इस विषय पर विचार किया जायगा।

३—संग्रह-मन्त्री ने अनुमान-पत्र पर विचार करने का विषय उपस्थित किया किन्तु अर्थ विभाग से अनुमान-पत्र तैयार न होने के कारण यह विषय स्थगित कर दिया गया।

४—संग्रह मन्त्री ने संग्रह लेखक के पद को स्थाई करने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि यह पद स्थायी किया जाय।

५—संग्रह-मंत्री ने महाराष्ट्र-शब्द-कोष खरीदने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि संग्रह मंत्री उचित मूल्य पर इस पुस्तक को ख़रीद लें।

६—श्री रामचन्द्र टण्डन ने प्रस्ताव किया कि प्राचीन हस्तलिपियों का तथा अन्य संग्रहणीय वस्तुओं का चित्र लेने के लिए एक केमरा ख़रीदने की व्यवस्था की जाय। निश्चय हुआ कि धन संग्रह कर केमरा ख़रीदा जाय।

७—संग्रह मंत्री ने वर्तमान माली की नियुक्ति स्थाई करने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि यह विषय कार्य-समिति में उपस्थित किया जाय।

संग्रहालय-समिति का पञ्चम अधिवेशन

संग्रहालय-समिति का पञ्चम अधिवेशन शनिवार, २५ फरवरी १९३९ ई० को ४॥ बजे दिन संग्रहालय भवन में डाक्टर सत्यप्रकाश के सभापतित्व में हुआ। पिछले अधिवेशन में स्थगित अनुमान-पत्र विचारार्थ उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

संग्रहालय का अलबम

गुरुकुल हरिद्वार से पं० किशोरीदत्त बाजपेयी ने आचार्य द्विवेदी जी के ४७ कार्ड तथा छः लिफ़ाफे और श्री माया शंकर याज्ञिक का एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र संग्रहालय में संग्रहार्थ भेजा है। ये पत्र एक सुन्दर अलबम में लगा कर संग्रहालय में रख दिये गये हैं। यदि इसी प्रकार अन्य सज्जन तथा हिन्दी के प्रेमी विद्वान, लेखकों, कवियों, तथा आचार्यों की वस्तुएँ भेजने की कृपा करते रहें तो संग्रहालय में ऐसे साहित्य की श्री-वृद्धि हो जाय और संग्रहालय में ऐसी वस्तुएँ सुरक्षित रह कर दर्शनार्थियों को लाभ पहुँचाती रहें।

संग्रह मन्त्री

प्रचार समिति का द्वितीय अधिवेशन

प्रचार समिति का द्वितीय अधिवेशन रविवार फाल्गुन सौर १४ सं० ९५ तदनुसार ता० २६-२-३९ को सम्मेलन के संग्रहालय में ११॥ बजे दिन से श्री बाबूराम जी सक्सेना के सभापतित्व में हुआ।

पिछले अधिवेशन की कार्यवाही स्वीकृत हो जाने के अनन्तर

(१) प्रचार मन्त्री ने आय-व्यय का अनुमान पत्र उपस्थित किया जो वाद विवाद के अनन्तर ज्यों का त्यों स्वीकृत हुआ।

(२) प्रचार मन्त्री ने प्रचारकों को कमीशन के रूप में कुछ पारिश्रमिक देने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि जो अवैतनिक प्रचारक साधारण सदस्य बनावें और उनका शुल्क प्राप्त करें उनको यदि वे स्वीकार करें तो, शुल्क का चौथाई अंश पारिश्रमिक के रूप में दिया जाय।

(३) प्रचार मन्त्री ने पिछले अधिवेशन में स्वीकृत निम्नलिखित प्रस्ताव स्थायी समिति में उपस्थित करने के लिए पेश किया। निश्चित हुआ कि प्रस्ताव स्थायी समिति के ता० २६-२-३९ के अधिवेशन में पेश किया जाय।

प्रस्ताव:—'जो आय साधारण सदस्यों के शुल्क से तथा प्रचारकों के प्रयत्न से हो वह प्रचार-विभाग की सम्पत्ति समझी जाय।

प्रचार-मन्त्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा समिति का तीसरा अधिवेशन

परीक्षा समिति का तीसरा अधिवेशन शनिवार ता० २५-२-३९ को सायंकाल ५ बजे से साहित्यरत्न पं० भगीरथ प्रसाद जी दीक्षित के सभापतित्व में सम्मेलन के संग्रहालय भवन में हुआ।

१—परीक्षा मन्त्री ने परीक्षा समिति के पिछले अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी और वह सर्व सम्मति से स्वीकृत हुई।

२—परीक्षा मन्त्री ने परीक्षा समिति के आगामी १२ मास का अनुमान पत्र विचारार्थ उपस्थित किया। वह नीचे लिखे अनुसार स्वीकृत हुआ।

१०७३०) बचत	२३००) वेतन
	१३००) काग़ज़
३००) विवरण पत्रिका	१२००) छपाई
	२५००) व्यवस्थापक परीक्षक
	१८००) तार टिकट
१५०००) शुल्क	७५) स्टेशनरी
	८००) मार्गव्यय
२५०) हि० स० लिपि	२००) सामान
	२५०) विवरण पत्रिका
२६२८०)	१२५) फुटकर
	४००) सम्मेलन पत्रिका
	२५०) हि० शीघ्र लिपि
	१००) व्याख्यान माला
	१०००) हिन्दी विद्यापीठ
	५००) विद्यालयों की सहायता
	१०००) राष्ट्रभाषा परीक्षा व्यय
	१००००) स्थायी कोष की घटी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०००) परीक्षकों को पुस्तकें भेंट सम्मानार्थ

१४८०) बचत

२६२८०)	२६२८०)

यह भी निश्चय हुआ कि परीक्षा विभाग की बचत में से १०००) सम्मेलन के स्थायी कोष में जमा कर दिया जाय और श्री परीक्षा मंत्री जी के प्रस्तावानुसार संवत् १९९५ के परीक्षकों को 'तुलसी दर्शन' नामक पुस्तक साहित्य विभाग से लागत मूल्य में ख़रीद कर भेंट स्वरूप दी जाय।

३—परीक्षा मन्त्री ने सं० १९९६ के लिए साहित्य वर्ग द्वारा सिफ़ारिश किये हुए प्रथमा, मध्यमा एवं उत्तमा परीक्षाओं के हिन्दी साहित्य विषय के परीक्षकों के निर्वाचन का विषय उपस्थित किया। सर्व सम्मति से प्रत्येक परीक्षा के उक्त विषय के प्रधान परीक्षक निर्वाचित किये गए।

प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं के अन्य विषयों के प्रधान एवं सहायक परीक्षकों के निर्वाचन के सम्बंध में निश्चय हुआ कि परीक्षा मन्त्री और प्रत्येक वर्ग के संयोजक मिलकर परीक्षक निर्वाचित कर लें।

४—परीक्षा मन्त्री ने हिंदी साहित्य विषय के पाठ्य क्रम के शुद्धीकरण के सम्बंध में उपसमिति के संयोजक साहित्यरत्न उदय नारायण त्रिपाठी की निम्न-लिखित रिपोर्ट विचारार्थ उपस्थित की :—

"श्री डा० बाबूराम सक्सेना, श्री काका कालेलकर तथा मेरी सम्मति है कि :—

(अ) निम्नलिखित पुस्तकें उत्तमा परीक्षा के पाठ्यक्रम से निकाल दी जायँ :—

१ बिहारी सतसई
२ भाव विलास
३ जगद्विनोद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ मतिराम ग्रन्थावली

५ रूपक रहस्य का तीसरा व चौथा अध्याय

(ब) उत्तमा परीक्षा का पहिला प्रश्नपत्र १४०० से १८०० तक कर दिया जाय और द्वितीय प्रश्नपत्र वीर काव्य का रक्खा जाय। इसका पाठ्यक्रम बनाकर भेज दिया जायगा।

(स) प्रश्नपत्र तीन, चार, छै तथा सात में भी निम्नलिखित परिवर्तन की आवश्यकता है।

ये चार प्रश्नपत्र नीचे लिखे अनुसार रखे जायँ—

प्रश्नपत्र ३—आधुनिक पद्य

पाठ्यग्रन्थ—

श्रीधर पाठक—काश्मीर सुखमा

सुमित्रानन्दन पन्त—गुञ्जन

अयोध्यासिंह उपाध्याय—प्रिय प्रवास

महादेवी वर्मा—नीरजा

मैथिलीशरण गुप्त—साकेत

निराला—तुलसीदास

जयशङ्कर प्रसाद—लहर और आँसू

रामकुमार वर्मा—चित्ररेखा

सूचना—इन कवियों के अन्य ग्रन्थों, इस काल के अन्य कवियों के ग्रन्थों तथा आधुनिक कविता की प्रगति का परिचय आवश्यक है।

नोट—उपर्युक्त तीनों प्रश्न पत्रों में काव्य, रीति, रस, ध्वनि, अलङ्कार तथा पिङ्गल पर प्रश्न रहेंगे। इन विषयों के अध्ययन के लिये निम्नलिखित ग्रन्थों से सहायता ली जा सकती है।

रामचन्द्र शुक्ल—हिन्दी काव्य में रहस्यवाद

कन्हैयालाल पोद्दार—काव्य कल्पद्रुम

रस गङ्गाधर (नागरीप्रचारणी सभा, काशी)

गिरिजादत्त शुक्ल—गुप्त की काव्यधारा

रामनाथ सुमन—सुकवि प्रसाद की काव्य साधना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न पत्र ४—गद्य तथा नाटक

पाठ्य ग्रन्थ—

सदल मिश्र—नासिकेतोपाख्यान (नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ)

इंशा अल्ला खां—रानी केतकी की कहानी

प्रेमचन्द्र—गोदान

रामचन्द्र शुक्ल—चिन्ता मणि

महावीरप्रसाद द्विवेदी—विचार विमर्श (केवल साहित्य खण्ड)

राय कृष्णदास—साधना

बख्शी—विश्वसाहित्य

हरिश्चन्द्र—मुद्राराक्षस

जयशङ्कर प्रसाद—चन्द्रगुप्त

लक्ष्मीनारायण मिश्र—सिन्दूर की होली

इस विषय के प्रश्नपत्र का साधारण ज्ञान प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित ग्रन्थ सहायक होंगे:—

गोकुलनाथ—अष्ट छाप

जगन्नाथ शर्मा—हिन्दी गद्य शैली का विकास

श्यामसुन्दर दास—रूपक रहस्य

प्रश्नपत्र ६—भाषा विज्ञान

यह प्रश्नपत्र तीन भागों में विभक्त होगा।

च—भाषा विज्ञान

त्र—हिन्दी भाषा का इतिहास

ज्ञ—व्याकरण

पाठ्य ग्रन्थ—

मंगलदेव शास्त्री—तुलनात्मक भाषाशास्त्र

श्यामसुन्दर दास और पद्म नारायण शर्मा—भाषा विज्ञान

धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास

कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)

प्रश्न पत्र ७—साहित्यालोचन इत्यादि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभक्त होगा।

क—साहित्यालोचन

ख—हिन्दी साहित्य का इतिहास

ग—हिन्दी भाषा भाषी लोगों की सभ्यता का इतिहास

पाठ्यग्रन्थ—

श्यामसुन्दर दास—साहित्यालोचन (नया संस्करण)

रामचन्द्र शुक्ल—हिन्दी साहित्य का इतिहास

रामकुमार वर्मा—हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

बेणी प्रसाद—हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता (हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग)

ओझा—मध्यकालीन भारतीय संस्कृति (हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग)

(द) मध्यमा परीक्षा के प्रश्न पत्र १ में प्रियप्रवास के स्थान पर कामायनी महाकाव्य (आरम्भ से लज्जा अंश तक) रख दिया जाय।

(इ) मध्यमा परीक्षा के प्रश्न पत्र दो में उत्तर रामचरित के स्थान पर श्री जयशंकर प्रसाद कृत अज्ञात शत्रु नाटक रख दिया जाय।

सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि:—

(१) यह परीक्षा समिति बिहारी सतसई, भावविलास, जगद्विनोद, मतिराम ग्रन्थावली और रूपक रहस्य नामक शृंगारिक ग्रन्थों के विरुद्ध नहीं है किन्तु जब तक उनके परिष्कृत संस्करण उपलब्ध नहीं होते तब तक के लिए यह उन्हें पाठ्यक्रम से पृथक कर देती है।

(२) उपर्युक्त परिवर्तन संवत् १९९७ की परीक्षाओं के लिए किये जायँ और संवत् १९९६ के लिये प्रश्न पत्र बनवाते समय परीक्षकों को यह आदेश दिया जाय कि वे पाठ्य ग्रन्थों के ऐसे अंशों से प्रश्न न दें जो उत्तानशृंगारात्मक तथा अश्लील हों।

५—परीक्षा मन्त्री ने उत्तमा परीक्षा के हिन्दी साहित्य विषय के लिए वीर काव्य के पाठ्य क्रम को निश्चित कर देने का विषय उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। सर्व सम्मति से इसके लिए निम्नलिखित ३ सज्जनों की एक समिति बनाई गई :—

(१) श्री गिरिजादत्त शुक्ल "गिरीश" प्रयाग
(२) ,, उदय नारायण त्रिपाठी प्रयाग
(३) ,, दयाशङ्कर दुबे प्रयाग

यह भी निश्चय हुआ कि इस समिति का निर्णय अन्तिम माना जाय।

६—परीक्षा मन्त्री ने नवीन केन्द्र स्थापित कराने वाले प्रार्थना पत्र विचारार्थ उपस्थित किये। सर्व सम्मति से इस सम्बंध में विचार करने के लिये निम्नलिखित सज्जनों की एक उपसमिति बनाई गई :—

(१) श्री बाबूराम सक्सेना
(२) ,, दयाशङ्कर दुबे

७—परीक्षा मन्त्री ने बिहार संस्कृत समिति की प्रथमा परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को मध्यमा में और प्रयाग महिला विद्यापीठ की विदुषी (आनर्स) उत्तीर्ण महिलाओं को उत्तमा में सम्मिलित होने के अधिकार देने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि बिहार संस्कृत समिति की प्रथमा परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को मध्यमा में बैठने का अधिकार दिया जाय और विदुषी (आनर्स) उत्तीर्ण छात्राओं को अधिकार देने का प्रश्न अभी स्थगित रखा जाय।

८—परीक्षा मन्त्री ने उत्तमा परीक्षा के संस्कृत विषय के पाठ्यक्रम के शुद्धीकरण के सम्बंध में संयोजक संस्कृत वर्ग का पत्र उपस्थित किया। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि संयोजक संस्कृत वर्ग के संशोधन स्वीकार किये जायं।

९—परीक्षा मन्त्री ने मन्त्री राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा प्राप्त सन् १९४० की राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं का पाठ्यक्रम विचारार्थ उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि पाठ्य क्रम जिस रूप में प्राप्त हुआ है उसी रूप में स्वीकार किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० परीक्षा मन्त्री ने धौलपुर केन्द्र के व्यवस्थापक का परीक्षा खर्च सम्बंधी बिल विचारार्थ उपस्थित किया। सर्व सम्मति से बिल स्वीकृत हुआ और सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

दयशङ्कर दुबे
परीक्षामन्त्री
२१—२—३९

हिन्दीविश्वविद्यालय परिषद् का दूसरा अधिवेशन

हिन्दीविश्वविद्यालय परिषद् का दूसरा अधिवेशन ता० २६ फरवरी सन् १९३९ को १२ बजे दिन से सम्मेलन के संग्रहालय भवन में श्री पं० श्रीनारायण जी चतुर्वेदी के सभापतित्व में हुआ :—

(१) परीक्षा मन्त्री ने हिन्दीविश्वविद्यालय परिषद् के प्रथम अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी और वह सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुई।

(२) परीक्षा मन्त्री ने आगामी १३ मास का अनुमान पत्र विचारार्थ उपस्थित किया। परीक्षा समिति ने उसे जिस रूप में स्वीकार किया था उसी रूप में वह स्वीकृत हुआ।

४—परीक्षा मन्त्री ने हिन्दी विद्यापीठ वैद्यनाथ धाम की प्रवेशिका और बिहार संस्कृत एसासियेशन की प्रथमा परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में तथा संस्कृत कालेज काशी की आचार्य, पंजाब की हिन्दी प्रभाकर एवं हिन्दी विद्यापीठ वैद्यनाथ धाम की साहित्य भूषण परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों को सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा में सम्मिलित होने के अधिकार देने का विषय उपस्थित किया। प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ :—

तत्पश्चात् सभापति महोदय को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

दयाशङ्कर दुबे
परीक्षा मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषय

१

हिन्दी-परिषद्

प्रिय महोदय,

जैसा आप को ज्ञात ही होगा हिन्दी परिषद् की तिथियां १४, १५, १६ अप्रैल, १९३९ रक्खी गई हैं। परिषद् अधिवेशन मात्र नहीं है—उसके द्वारा साहित्यिक और सांस्कृतिक उद्देश्य रखनेवाली हिन्दी की एक संगठित संस्था पाने की भी आशा है। परिषद् के अधिवेशन के सामने विचार और निर्णय के लिये बहुत से प्रश्न हैं। लोकजीवन के निर्माण में साहित्य पर ख़ासा दायित्व है और हिन्दी जब कि समूचे हिन्द की भाषा है तब हिन्दी वालों पर भारतीय जीवन को लेकर विशेष जिम्मेदारी को निबाहने लायक़ हिन्दी साहित्य को बनाना है। इस के लिये संगठित उद्योग की आवश्यकता होगी। आशा है आप उक्त तिथियों में परिषद् में उपस्थित होकर विचार विनिमय का लाभ हमें देंगे।

परिषद् की कार्य-पद्धति इस प्रकार रखने का विचार है। पहले दिन साहित्य के कला, नीति और लोकपक्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ वक्तव्य प्रस्तुत कर दिये जायँगे। उनके और बाहर से आये हुये अन्य मन्तव्यों के आधार पर उसी शाम को विषय-निर्वाचिनी प्रस्तावों पर विचार करेगी। वे प्रस्ताव अगले दिन की खुली बैठकों में विवेचन के लिये सामने आयेंगे।

आप के विचार इस लिये यदि पहले प्राप्त हो जायें तो उस से काम में सुभीता हो सकेगा। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

विनीत,
मन्त्री
हिन्दी-परिषद्, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२

मान्यवर,

सम्मेलन पत्रिका के २६ पृष्ठ में कवियों की नामावली के क्रम के सम्बन्ध में एक विचार पाया। २८ फरवरी तक सम्मतियों के पहुंचने का दिन निश्चय है। मैं कुछ विलम्ब से लिख रहा हूँ। तथापि मेरी राय उपादेय हो तो इसे सम्मिलित करने की कृपा करेंगे। निवेदन है:—

१. कबीर, मीरा, नानक, नरसी और विद्यापति के नाम रखे जांय और बिहारी, भूषण, मतिराम, और भिखारीदास, इत्यादि के नाम छोड़ दिये जांय, किसी सिद्धान्त के अनुसार नहीं दीखता। मेरी समझ से, चाहे यह लोकमत के प्रतिकूल ही समझा जाय, उपर्युक्त पांच कवि कोई कवि नहीं थे। भक्त और भावुक थे। विद्यापति तो एक निरा देहाती कवि था जिसको छन्द रचना भी ठीक ठीक नहीं आती थी। गंवारपन इसके भावों में बहुत पाया जाता है।

२. उत्कृष्टता का क्रम भी बहुत अटपट रखा गया है। रहीम का नाम जहां पर रखा गया है उससे वह कहीं ऊंचे दर्जे के कवि हैं। परन्तु योग्यता पर क्रम का स्थिर करना एक अति विवादास्पद विषय है और सदा विवादास्पद रहेगा। एक सार्वजनिक संस्था को इस बखेड़े में पड़कर आक्षेपों का सामना करने से क्या लाभ? अतएव इन नामों को उनकी प्राचीनता के विचार से रखना ही अधिक न्याय संगत जान पड़ता है।

पुनः—

मेरे लिखने में कोई बात अनुचित हो तो कृपया क्षमा करेंगे।

विनीत

(स्थाई सदस्य, छपरा) भगवती प्रसाद सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

[समालोचना के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजने की कृपा कीजिए। संपादक]

त्रिपुरी का इतिहास—श्री व्योहार राजेन्द्रसिंह एम० एल० ए० और श्री विजयबहादुर श्रीवास्तव बी० एस सी०, एल-एल० बी०, प्रकाशक मानसमन्दिर जबलपुर, मूल्य १।) पृष्ठ संख्या २२२ आरम्भ में डाक्टर गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा की ३ पृष्ठों की भूमिका।

इस वर्ष कांग्रेस का ५२ वां अधिवेशन त्रिपुरी के ऐतिहासिक क्षेत्र में हुआ था। यह ऐतिहासिक स्थान भारत के राजनीतिक संघर्ष में विशेष स्थान रखता है। प्रस्तुत पुस्तक इसी स्थान के ऐतिहासिक महत्त्व को प्रकाश में लाने के लिए लिखी गई है।

विद्वान लेखकों ने त्रिपुरी के इतिहास की बहुत खोज की है। ऋग्वेद और महाभारत काल से लेकर अन्तिम गोंड नरेशों तक का काल अत्यन्त खोज पूर्ण सामग्री से लिखा गया है। प्राचीन शिलालेखों और ग्रन्थों से ऐतिहासिक निष्कर्ष निकाल कर लेखक द्वय ने ग्रन्थ को प्रामाणिक बनाने में विशेष परिश्रम किया है। ऐतिहासिक वृत्त के साथ संस्कृति के विकास का भी यथेष्ट निरूपण किया गया है। बीच बीच में प्रधान ऐतिहासिक व्यक्तियों की जीवन गाथा और उनके महत्त्व का भी बड़ा मनोरंजक और युक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है। भाषा सरल और मुहाविरेदार है। ग्रन्थ को अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनेक मूर्तियों एवं स्थानों के चित्र भी हैं। ग्रन्थ वास्तव में उपादेय है और इसके लिए हम लेखक महोदयों के परिश्रम की सराहना करते हैं। आशा है, अपनी इस सफलता से उत्साहित होकर लेखक महोदय अन्य ऐतिहासिक स्थानों एवं वृत्तों की खोज कर हिन्दी के इतिहास-साहित्य की श्री-वृद्धि करेंगे।

मोहनलाल गुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालगीताञ्जलि—लेखक पं० श्यामनारायण त्रिपाठी विशारद, प्रकाशक पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र, भगवानपुर, पोस्ट तिल्हापुर, जिला इलाहाबाद। मूल्य -)। पृष्ठ संख्या २४।

इस पुस्तक में बालकों के मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन के लिए सरल और सुबोध भाषा में अच्छे अच्छे पद्य दिये गए हैं। पद्यों के विषय देशभक्ति एवं सुरुचिपूर्ण विचारों के संबंध रखते हैं। आशा है, बालक गण ये पद्य बड़े चाव से पढ़ेंगे। एकाध स्थान पर भाषा अशुद्ध हो गई है। जैसे—

अफ़ज़ल को यमपुर पहुँचाया, अपनी खासी धाक जमाया।

आशा है, अगले संस्करण में लेखक महोदय व्याकरण की ऐसी अशुद्धियों पर ध्यान देंगे।

—चन्द्र प्रकाश वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय दृष्टिकोण

१—वर्तमान हिन्दी कविता

हिन्दी कविता का प्रवाह आजकल जिस दिशा में हो रहा है, उससे साहित्य की उन्नति होना असंभव है। वर्तमान कविता की प्रधानतः दो ही दिशाएँ हैं। प्रथम तो छायावाद की और दूसरी साम्यवाद की। छायावाद विषय इतना गहरा और गूढ़ है कि उसमें सफल रचना बिना साधनाके नहीं हो सकती। यह साधना अनुभूति की है और सभी कवि अनुभूतिमय काव्य-रचना नहीं कर सकते। हिन्दी के अधिकांश कवि पुरानी घिसी हुई भावनाओं का भिन्न भिन्न शब्दों में आवर्तन मात्र करते हैं। फिर छायावाद की कविता व्यक्तिगत ही होती है, वर्गगत नहीं। वर्तमान देश की परिस्थितियों में हमें वर्गगत कविता की भी आवश्यकता है। अतः जो कवि स्वयं समझते हैं कि वे छायावाद की कविता करने में असमर्थ हैं या अपना प्रसिद्ध नाम चलाने के लिए ही कविता की पंक्तियाँ लिखते चले जा रहे हैं, उन्हें कम से कम अपनी कविता की दिशा बदल देनी चाहिए।

कविता की दूसरी दिशा है साम्यवाद। आजकल मज़दूर और किसान पर भी हमारे कवियों की लेखनियाँ चल पड़ी हैं। यथार्थवाद की रचनाएँ वे केवल भावावेश में आकर किसी प्रकार कर देते हैं। पर वे शायद यह नहीं समझते कि साधारण विषयों पर कविता लिखना गंभीर विषय पर कविता लिखने की अपेक्षा कहीं कठिन है। सरल भावों को सरल शब्दों में स्पष्ट करना कवि-प्रतिभा की अपेक्षा रखता है। ऐसी स्थिति में सब से अधिक सफल कवि ही जीवन के साधारण कार्य-व्यापार या वस्तु-स्थिति का चित्रण कर सकता है। दूसरी बात है साम्यवाद के सिद्धान्तों का प्रतिपादन। कविता उपदेश का स्थल नहीं है, अतः साम्यवाद के उपदेश कविता में नहीं दिये जा सकते। जो कविता के द्वारा साम्यवाद का प्रचार करना चाहते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें चाहिए कि वे पद्य के बदले गद्य का आश्रय ग्रहण करें। उसमें वे अधिक सफल होंगे। जब तक साम्यवाद के विचार कवियों के हृदय में स्थिर न हो जावें, और वे उन्हें अपने प्राण के स्थान पर न बिठला सकें तब तक हिन्दी में साम्यवाद की सफल रचना नहीं हो सकती। साम्यवाद के कवि को मजदूर और किसान के हृदय में प्रवेश कर उनके रक्त से अपने भावों में उष्णता लाने की साधना करनी चाहिए। भारत में साम्यवाद की आयु क्या है? अतः पहले साम्यवाद को समझने की चेष्टा होनी चाहिए।

हिन्दी में देशभक्ति की कविताएं नहीं के बराबर हैं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने जिस लगन से भारत दुर्दशा नामक नाट्यरासक की रचना की थी, वैसी लगन आज के कवि में नहीं है यद्यपि आज का कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ५५ वर्ष के संस्कृति-विकास से परिचित है। भारत की स्वतंत्रता के लिए अविरत आन्दोलन हो रहा है और यह आन्दोलन जनता का है क्योंकि कांग्रेस भारतीय जनता की संस्था है। हमारा कवि जनता की मनोवृत्ति की उपेक्षा कहाँ तक कर सकेगा? क्या हमारा कवि अपनी कल्पना की इन्द्रधनुषी स्याही से देश-भक्ति और स्वतंत्रता की पंक्तियाँ न लिख सकेगा?

२—बाल-साहित्य

साहित्य सम्मेलन बाल साहित्य माला प्रकाशित कर रहा है। अभी तक उसने इस विषय की तीन पुस्तकें प्रकाशित की हैं—वीर सन्तान, बाल पंच रत्न और बिजली। वह इस माला में अच्छे-अच्छे ग्रन्थ प्रसून गुंफित करना चाहता है। लेखकों से प्रार्थना है कि वे सुन्दर बाल साहित्य की पुस्तकें लिख कर साहित्य-मंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के पते से भेजने की कृपा करें। लेखक महोदय निम्न-लिखित बातों पर विशेष ध्यान दें।

१—पुस्तक गद्य या पद्य में हो किन्तु भाषा सरल और सुबोध रहे।

२—पुस्तक १०० पृष्ठों से अधिक की न हो।

३—पुस्तक में भूत, प्रेत या परियों की कहानी न हो। पुस्तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113036

ऐतिहासिक व्यक्ति जैसे गौतमबुद्ध, ईसा, मुहम्मद, गुरु गोविन्द सिंह, शिवाजी, महाराणा प्रताप, गोरा, बादल, लक्ष्मीबाई, दुर्गावती आदि चरित्रों से लिखी जावे। उनसे आत्म-सम्मान, देश-भक्ति, स्वतंत्रता आदि भावों का प्रोत्साहन मिलना चाहिए। मौलिक पुस्तक पर बीस प्रतिशत या समिति के निर्णयानुसार रायल्टी दी जा सकेगी। पुस्तक की हस्तलिखित प्रति साहित्य मन्त्री के पास १५ मई तक पहुँच जानी चाहिए।

३—पूज्य टंडन जी अस्वस्थ

युक्तप्रान्तीय लेजिस्लेटिव असेम्बली के स्पीकर और सम्मेलन के सर्वस्व माननीय पुरुषोत्तमदास जी टंडन आजकल लखनऊ में अस्वस्थ हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे शीघ्र ही स्वस्थ होकर असेम्बली और सम्मेलन के कार्यों में पथ-प्रदर्शन करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Checked
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar